सिर्फ़ बालिग़ों के लिए

गुप्त भेद

(पोशीदा राज़)

मुफ़्ती व हकीम मुहम्मद अशरफ अमरोहवी

गुप्त भेद

(पोशीदा राज़)

सिर्फ़ बालिग़ों के लिए

•

लेखकः

मुफ़्ती व हकीम मुहम्मद अशरफ़ अमरोहवी

अनुवादकः

मुहम्मद यूसुफ़ मक़सूद रामपुरी

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०

दरिया गंज नई दिल्ली-2

नाम किताबः

गुप्त भेद
(पोशीदा राज़)

लेखक :

मुफ़्ती, हकीम मुहम्मद अशरफ़ अमरोहवी

Off. No. 281/E-Block, B.D.A. Layout,
H.M. Road, Cross Church Street,
Lingrajpuram, Banglore - 560084.
Ph.- 080-5489093

पृष्ठ: 72

प्रथम संस्करण: जून 2004

संयोजन से:
नासिर ख़ान

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book
GUPT BHAID (POSHIDA RAAZ)

Pages: 72 Size: 23x36/16

विषय सूची

++++++

दीबाचा (आमुख)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुक्र व हम्द है उस मालिक व ख़ालिक़ का जो तमाम कायनात का पालनहार है। कायनात की तमाम मख़्लूक़ व ज़मीन के तमाम ज़र्रात से अधिक और मख़्लूक़ के साँसों से ज़्यादा दरूद (सलात व सलाम) नाज़िल हों और होते रहें अल्लाह के आख़िरी नबी व रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रूह-ए-पाक पर हमेशा-हमेशा तक।

हम्द व सलात के बाद यह नाकारा मुहम्मद अशरफ़ अमरोहवी अ़र्ज़ करता है कि चन्द (कुछ) मुख़्तसर गुप्त भेद ज़हन (दिमाग़) में थे। जिनको आ़म जनता के समाने पेश करते हुए आ़र (शर्म) आती है और उनका ज़ाहिर करना भी ज़रूरी था। और लोगों को उनका जानना भी ज़रूरी है। जैसा कि आपको किताब पढ़ने से पता लग जाएगा। बस उचित यह ही मालूम हुआ कि क़लम के सहारे लोगों पर ज़ाहिर करूँ, बस जो इस वक़्त दिमाग़ में आए आप की सेवा में हाज़िर करता हूँ। आज रब्बुलआ़लमीन का अधिक्तम फ़ज़्ल व करम हुआ और मुझे बड़ी खुशी है कि ख़ालिक़-ए-आ़लम ने मेरी इससे पहले वाली किताब "तनहाई के सबक़" को मक़्बूलियत अ़ता फ़रमाई। मेरी दुआ़ है कि इस "पोशीदा राज़" को भी आ़म व ख़ास लोगों में मक़्बूल फ़रमाएं ! आमीन।

हक़ीक़त तो यह ही है कि जो गुर मैंने इस किताब में लिखे हैं। वे ऐसे हैं जो कि माँ-बाप भी अपनी ज़बान से नहीं बता सकते बल्कि कुछ ऐसी बातें भी हैं जो कि शौहर भी अपनी बीवी से नहीं कह सकता शर्म व हया की वजह से, हालांकि वे सब ज़रूरी भी हैं। अल्लाह पाक मेरी इस ख़िद्मत को क़ुबूल फ़रमाए और इस किताब से फ़ायदा उठाने वाले मेरी बख़्शिश की दुआ़ करें।

मुहम्मद अशरफ़ अमरोहवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तमाम क़िस्म की तारीफ़ें अल्लाह वहदहू लाशरीक लहू (जो अकेला है उसका कोई साझी नहीं है) के लिये हैं और वही तमाम ख़ूबियों व तारीफ़ों का सही मुस्तहिक़ है और अनगिनत सलाम व सलात के हदये हमारी और सब की जानिब से उसके आख़िरी नबी रसूल स०अ०व० की पाक रूह पर नाज़िल हों और हमेशा-हमेशा होते रहें और सलाम तमाम नबीयों पर व रसूलों पर, सहाबा व बज़ुर्गान-ए-दीन पर!

फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने क्या इन्सान मनी (वीर्य) की एक बूंद न था जो टपकायी जाती है। फिर वह एक लोथड़ा बना, फिर अल्लाह ने उसका पूरा ढाँचा बनाया। और हर तरह आज़ा (अंग) ठीक बनाए फिर उसकी दो क़िस्में बनायी (१) पुरूष (२) स्त्री! क्या अल्लाह तआ़ला इस पर क़ादिर नहीं है कि वह मुर्दों को ज़िन्दा कर के उठाए? लोगो! अगर तुम को मरने के बाद ज़िन्दा होने में शक है तो (सोचो) हमने तुम को मिट्‌टी से पैदा किया फिर नुत्फ़े से फिर खून के लोथड़े से फिर मांस की बोटी से जिसकी बनावट कामिल भी होती है और नाक़िस भी। यह सब इसलिए बना रहें हैं ताकि तुम पर हक़ीक़त खुल जाये हम जिस नुत्फ़े को चाहते हैं। एक ख़ास वक़्त तक बच्चेदानी में बाक़ी रखें फिर तुमको एक बच्चे की शक्ल में निकालते हैं। फिर तुम्हारी परवरिश करते हैं ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो और तुम में से कोई पहले ही वापस बुला लिया जाता है और कोई सठयाई हुई उम्र तक फेर दिया जाता है ताकि सब कुछ जानने के बाद फिर कुछ न जाने।

(तर्जुमा-ए-क़ुरआन मजीद)

इन्सान की दो क़िस्में बयान की गई हैं (1) पुरूष (2) स्त्री और आपस में दोनों का ऐसा गहरा सम्बन्ध है कि मर्द (पुरूष) फ़ितरतन स्त्री का मोहताज है और इसी प्रकार स्त्री भी पुरूष की मोहताज है। अपनी जिंसियात की चाहत को पूरा करने में। अगर ये जिंसियाते ख़्वाहिश जाइज़ (हलाल) तरीक़े पर हों तो इस का नाम निकाह है जैसा कि मशहूर हदीस है कि निकाह मेरी सुन्नत है निकाह की चार क़िस्में हैं:

निकाह कि क़िस्में

(1) निकाह-ए-फ़र्ज
(2) निकाह-ए-सुन्नत
(3) निकाह-ए-मक्रूह
(4) निकाह-ए-हराम

(1) निकाह फ़र्ज़ जब होता है, जब पुरुष को क़ुव्वते मर्दानगी इतनी ग़ालिब हो कि ज़िनाकारी (बलात्कार) में फंस जाएगा और बदनी ताक़त के साथ-साथ माली ताक़त भी मौजूद है तो फिर ऐसे हालात में निकाह फ़र्ज़ होता है।
(2) निकाह सुन्नत जब होता है, जब कि क़ुव्वते मर्दानगी न बहुत ज़्यादा ग़ालिब हो और न बिल्कुल ख़त्म हो बल्कि दर्मियानी हालत हो कि स्त्री के हुक़ूक़ अदा कर सके तो ऐसी हालत में निकाह करना सुन्नत है।
(3) निकाह मक्रूह जब होता है, जब कि मर्द को यह अन्दाज़ा हो कि अगर मैं निकाह कर लेता हूँ तो शायद बीवी के हुक़ूक़ मुझ से अदा न हो सकेंगे। तो फिर ऐसी हालत में निकाह करना मक्रूह है।
(4) निकाह हराम जब होता है, कि जब मर्द को पूरा यक़ीन हो कि अगर वाक़ई मैंने निकाह कर लिया तो बीवी के हुक़ूक़ मैं अदा नहीं कर सकता और न अदा हो सकते हैं। बीवी पर सिवाए ज़ुल्मो ज़्यादती के कोई फ़ायदा मेरी ज़ात से नहीं हो सकता। तो जब बीवी के हुक़ूक़ अदा न कर सकने का यक़ीन हो तो ऐसी हालत में निकाह करना हराम है ख़ूब समझ लो अगर जिन्सी ख़्वाहिशात हलाल जाइज़ तरीक़े पर न हों तो उस के तीन तरीक़े हैं और तीनों हराम हैं।
(1) ज़िना (2) ज़लक़ (3) इग़लामबाज़ी (लिवालत)
जिसकी तफ़सील हम आगे बयान करेंगे।

जौहर-ए-इन्सान का परिचय

मनी (वीर्य) इन्सान का जौहर है तेल की तरह, जैसे कि चिराग़ में जब तक तेल बाक़ी रहेगा चिराग़ रोशन रहेगा अगर तेल ख़त्म हो तो चिराग़ की रोशनी भी ख़त्म हो जाती है इसी जौहर यानी वीर्य पर इन्सान की मर्दानगी बाक़ी है।

वीर्य की पहचान

वीर्य की पहचान यह है कि वह (1) गाढ़ा पानी होती है। (2) सफ़ेद

होती है। (3) कूद कर निकलती है। अक़्लमन्दों ने कहा है कि जो ग़िज़ा इन्सान खाता है पहले उससे रस बनता है फिर उस रस से खून बनता है फिर उस खून से गोशत बनता है फिर उस गोशत से चर्बी बनती है। फिर उस चर्बी से हड्डियां बनती हैं फिर उन हड्डियों से मग़ज़ तैयार होता है फिर छब्बीस दिन के बाद यह वीर्य तैयार होता है। गोया कि सात मशीनों में जाकर वीर्य बनता है। किस क़द्र क़ीमती चीज़ है। बड़े बेवकूफ़ हैं वे लोग जो इस क़ीमती जोहर को ग़लत तरीक़े से ग़लत मुक़ाम पर तबाह व बर्बाद करते हैं। जो ऐसा करते हैं बाद में हमेशा-हमेशा पछताते हैं।

जौहर-ए-इन्सानी की क़द्र का बयान

जैसा कि हम पीछे बयान कर चुके हैं कि यह जौहर वीर्य है। उसका रंग सफ़ेद होता है मनी (वीर्य) गाढ़ी मिस्ल क़िवाम के होती है और निकलते वक़्त कूद कर निकलती है जो स्त्री की शर्मगाह में पहुँच कर गर्भ के टिकने व ठहरने का ज़रिया बनती है। यूँ समझो कि इन्सान के पैदा होने का तुख़्म (बीज) होती है और यह वीर्य निकलते वक़्त जवान मर्द के लिंग से 3 माशे से लेकर 6 माशे तक निकलती है। इस वीर्य में सबसे ज़रूरी चीज़ वीर्य के शुक्राणुओं का होना है। अगर यह शुक्राणु न हों तो हमल (गर्भ) नहीं ठहर सकता और वीर्य में ये कीड़े हज़ारों की तादाद में होते हैं। अगरचे गर्भ ठहरने के लिए वीर्य का एक शुक्राणु भी काफ़ी है। वीर्य के शुक्राणुओं का सर किसी क़द्र गोल और चपटा होता है और ये वीर्य के कीड़े इस क़द्र छोटे होते हैं कि दूरबीन के द्वारा ही दिखाई दे सकते हैं और यह वीर्य बनता है खून से। जिस क़द्र व्यक्ति के शरीर में खून अधिक होगा उतना ही वीर्य भी अधिक बनेगा। जवानी में वीर्य अधिक बनने का यही कारण है कि जवानी में व्यक्ति के शरीर में खून अधिक बनता है। इन्सान के शरीर में वीर्य बनाने वाले कई अंग हैं जैसे जिगर, गुर्दा, दिल, दिमाग़ वग़ैरह शरीर के इन अंगो का सही होना और पुष्ट होना अति आवश्यक है ताकि व्यक्ति जो खाना खाए उससे अधिक से अधिक खून बन सके।

सम्भोग करना सबसे ज़्यादा लज़ीज़ है

सम्भोग करना सबसे ज़्यादा लज़ीज़ है। लेकिन ज़्यादती सबसे अधिक नुक़्सान देह भी है। ख़ालिक़-ए-कायनात ने सम्भोग में लज़्ज़त छुपा रखी है। ताकि व्यक्ति ही नहीं पशु और जानवर भी इस मिलाप पर रग़बत रखें। जिस तरह खाने-पीने की चीज़ों में स्वाद (लज़्ज़त) है। इसी तरह ब्लकि इससे भी अधिक सम्भोग में लज़्ज़त है। अक़्लमन्दों ने कहा है कि स्वर्ग (जन्नत)की

लज़्ज़तों में से संसार के अन्दर यही एक लज़्ज़त मौजूद है और दुनिया के अन्दर इस सम्भोग से बढ कर किसी और चीज़ में ऐसी लज़्ज़त नहीं है। इसी लज़्ज़त की वजह से व्यक्ति अपनी इज़्ज़त और दूसरों की इज़्ज़त बर्बाद कर लेता है। ज़िना, जल्क़, इग़लाम बाज़ी में अपने आप को बर्बाद कर लेता है। यानी पहले मज़ा फिर सज़ा। और इसका भी ख़याल नहीं करता कि इस नतीजे का तीजा हो जाएगा और इतना क़ीमती जौहर जो कि सात फ़ैक्ट्रियों में तैयार हुआ मनी जिसे क़ुव्वते मर्दानगी कहते हैं। यहीं से मर्द और नामर्द में फ़र्क़ होता है और यह मिलाप एक ऐसा अ़मल है कि अशरफ़ुल मख़्लूक़ात (इन्सान) से लेकर जानवरों व हैवानों में भी शिरकत है।

इन्सान के लिंग का परिचय

जिस उज़्व के द्वारा सम्भोग क्रिया किया जाता है उसको लिंग कहते हैं। लिंग की बड़ी अहमियत है क्योंकि यह मिलाप का आला है यानी ख़ज़ाना ए मनी को दूसरे स्थान पर लज़्ज़त व सुरूर के साथ पहुँचाने का कार्य समपन्न करता है। मालूम होना चाहिए कि लिंग को सख़्त करने की ताक़त दिल से होती है और उसका एहसास पट्ठों यानी मांसपेशियो से और इसकी ख़ुराक जिगर से मिलती है और आपस में मिलने की ख़्वाहिश जिगर व गुर्दे से होती है। और लिंग में एहसास बहुत बढ जाता है और लिंग में लाल ख़ूँन की रगें और काले ख़ूँन की रगें (नसें) और माँसपेशियाँ अधिक सक्रिय हो जाती हैं। इंद्रिय (लिंग) का अत्याधिक क्रियाशील होना ख़ून की नसों और माँसपेशियों के अधिक सुचारू रूप से क्रिया करने से होता है। लिंग का शुरू का हिस्सा यानी अगला भाग सुपारी की तरह गोल होता है इसलिए इसको सुपारी ही कह देते हैं और इस सुपारी के सिरे में पेशाब का सुराख़ होता है।

लिंग यानी इंद्रिय की लम्बाई

व्यक्ति के लिंग की लम्बाई औसतन छः मिली हुई उंगलियों के बराबर होती है और स्त्री की बच्चे दानी की गर्दन की लम्बाई भी इतनी ही होती है। अगर किसी पुरुष का लिंग लम्बाई में छोटा हो कि स्त्री की बच्चे दानी तक नहीं पहुँच पाता या छोटा होने की वजह से मिलाप करते समय परेशानी होती है तो इसके लिए कुछ समय तक लगाने की दवा की आवश्यकता है लेकिन ज़रूरत के समय बेहतर तरीक़ा यह है कि औरत के नितम्ब के नीचे तकिये की तरह कोई ऊँची चीज़ रखी जाये फिर सम्भोग करते समय यह परेशानी सामने नहीं आयेगी।

ख़त्ना पुरूष के लिए लाभदायक व ज़रूरी है

सुपारी के उपर टोपी की तरह एक खाल होती है। जिसको मुसलमान ख़त्ना के नाम से कटवाते हैं। इस खाल को काट देने से बहुत से फ़ायदे व्यक्ति को होते हैं और बहुत सी तक्लीफ़ों और बीमारियों से रक्षा होती है। मुसलमानों में लिंग से मुताल्लिक़ सुपारी की बीमारियाँ ग़ैर मुसलमानों की अपेक्षा बहुत कम होती हैं। यहूदी और ईसाई भी अब ख़त्ना कराने पर मजबूर हैं। कुछ ग़ैर मुस्लिम भी इस फ़ायदे की वजह से,बीमारी से बचने और हिफ़ाज़त के तौर पर घूँघट की खाल कटवाते हैं और इसी का नाम ख़त्ना है। इस ख़त्ना कराने से एक फ़ायदा यह भी है कि बदबूदार पीप निकलकर खाल के नीचे एकत्र नहीं होती जिसकी वजह से दुर्गन्ध और ज़ख्म का ख़तरा रहता है। लिंग में नसों और पटठों की बारीक रगों का जाल फैला होता है। जो लिंग की ताक़त बढाने में बहुत अधिक सहयोग देता है।

ख़ुस्यों (अंड कोष) का परिचय

अंडकोष लिंग के नीचे होते हैं और डेढ इंच लम्बे सवा इंच मोटे और आधा छटांक वज़न, अन्डे की शक्ल की दो गुठली होती हैं। जिनमें वीर्य पैदा होता है। इन अन्ड कोष के अन्दर बारीक-बारीक नसें इकट्ठा होती हैं बाल के बराबर-बराबर नालियाँ हैं जिनकी लम्बाई तीन बालिश्त होती है। अगर इन नसों को अलग-अलग करके आपस में एक दूसरे से जोड़ें तो सब मिलकर लम्बाई में लगभग दो मील तक पहुँच जायेंगी। और शरीर के वीर्य बनाने वाले अंगों से वीर्य बनकर उनके द्वारा यहाँ एकत्र होता है।

पोशीदा राज़

जिस प्रकार गर्भ ठहरने के लिए स्त्री पुरूष का सम्भोग आवश्यक है उसी प्रकार पुरूष के लिंग में सख़्ती के साथ क्रियाशील होना भी आवश्यक है। क्योंकि ख़ुदा ने इन्सान के शरीर में सिर से लेकर पैर तक नसों का जाल बिछा दिया है और इन सब का ताल्लुक़ (सम्बन्ध) पुरूष के लिंग से जुड़ा हुआ है अगर आप ध्यान दें कि यदि कोई बात जोश पैदा करने वाली देखने या सुनने में आती है या सोची जाती है तो दिमाग़ फ़ौरन क्रियाशील हो जाता है और लिंग में एक विशेष क्रिया शुरू हो जाती है। अगर स्वस्थ पुरूष है तो उसका लिंग तब तक तनाव में रहेगा जब तक कि या तो वीर्य बाहर न निकल जाये या दिमाग़ से वे ख़्यालात बाहर न निकल जायें और जब वीर्य बाहर निकल जाता है तो व्यक्ति एक प्रकार की संतुष्टि महसूस करता है। इसलिए कि वीर्य के निकलते ही रग

एवं पट्ठे अपना कार्य करना बन्द कर देते हैं और तनाव ठंडा होकर लिंग की सख़्ती को समाप्त कर देता है और इस प्रकार थकान से नींद आने लगती है इसीलिए कहते हैं कि वीर्य का निकलना नींद लाता है।

लिंग पर लगाने की दवा

नामर्दी को समाप्त करने के लिए खाने की दवाओं के साथ-साथ उपर लगाने की दवा भी आवश्यक है ताकि उसकी रगें व नसें ठीक हो जायें जिन में कमज़ोरी आ गई है और मुर्दा रगें ज़िन्दा हो जायें इसके लिऐ एक शाही लगाने की दवा का नुस्ख़ा पेशे ख़िदमत है।

लिंग पर लगाने का शाही तिला

एक बड़ा बैगन जो ख़ुद पेड़ पर पक कर पीला हो गया हो उसको तोड़ लें। उसमें चारों तरफ़ से साठ लोंगें चुभो दें फिर उस बैगन को छाँव में लटकाकर सुखावें। जब यह छाँव में सूख जाए तो उतार लें और आधा किलो असली तिल का तेल कढ़ाई में डालकर हल्की आग पर रख दें फिर उसमें यह बैगन छोड़ दें और किसी नीम की लकड़ी से बराबर चलाते और घोटते रहें। जब बैगन तेल में मिल जाए तो ख़ुश्क ख़रातीन 6 तोला डाल कर मिलालें। फिर पाँच तोला छिले हुए लहुसन के जवें डाल दें। और जब ये तमाम दवाऐं आधी जल जायें तो आग से नीचे उतार लें और ख़ूब अच्छी तरह मिला लें ताकि तमाम दवाऐं ख़ूब एक दूसरे से मिल जायें फिर शीशी में रख लें। ज़रूरत के समय शीशी को हिलाकर दो माशे लिंग पर एक उंगली के पोरे से मालिश करें इतनी कि तेल ख़ुश्क हो जाये फिर अन्डी (अरन्ड) का पत्ता बांध दें। बारह दिन में मुकम्मल फ़ायदा हो जायेगा। इन्शाअल्लाहु तआ़ला

नोटः हकीम साहिबान के मश्वरे के बिना कोई भी नुस्ख़ा न बनायें और न इस्तेमाल करें।

लिंग को लम्बा करने के लिए

अगर किसी का आला-ए-तनासुल (लिंग) छोटा हो तो उसके लिए यह दवा मुफ़ीद है। गन्धक साफ सुथरी और पीपल दोनों बराबर वज़न लेकर बिलकुल बारीक कर लें और शहद में मिला कर लिंग पर मालिश कर लें और एक घंटे के बाद गर्म पानी से धो लिया करें।

लिंग को लम्बा और मोटा करने के लिए

यह दवा लिंग को मोटा और लम्बा करती है, बिनोले के बीज पीस कर

छान कर ताज़ा कच्चे दूध में मिलाकर सम्भोग करने से पहले लिंग पर मालिश कर लिया करें। लगातार इसकी मालिश करने से साइज़ भी बढ़ जाता है।

अगर वीर्य में शुक्राणु न हों तो उसका इलाज

कुछ व्यक्तियों के वीर्य में शुक्राणु न होने से औलाद पैदा नहीं होती। और उससे नस्ल भी आगे नही बढ़ती। इस की पहचान यह होती है कि वीर्य को माइक्रोस्कोप से देखा जाए तो उसमें शुक्राणु नहीं होते। ऐसे लोगों के खुस्ये (अन्ड कोष) सिरे से मौजूद ही नहीं होते या अगर होते भी हैं तो बहुत छोटे-छोटे होते हैं या उनकी बनावट में फ़र्क़ होता है। कुछ लोगों को जन्म से ही यह बीमारी होती है जिसकी वजह से वीर्य में शुक्राणु नहीं होते। अगर यह बीमारी जन्म से है या बुढ़ापे की वजह से है तो इसका इलाज नहीं है और अगर किसी दूसरे कारण से यह बीमारी है जैसे हम पहले बता चुके हैं कि वीर्य बनाने वाले अंग यानी दिल, दिमाग़, गुर्दे, जिगर वग़ैरह हैं तो पहले उन की सेहत को अच्छा बनायें उन आज़ा की कमज़ोरी को दूर करें फिर बाद में वीर्य में कीड़े (शुक्रांणु) पैदा करने की दवा पयोग करें। इसकी अलग-अलग बहुत सी दवाऐं हैं।

वीर्य में शुक्राणु पैदा करने का नुस्ख़ा

किसी अच्छे हकीम को अपने हालात बता कर और उससे मश्वरा लेकर दवा इस्तेमाल करें। नोटः हकीम की इजाज़त के बग़ैर कोई दवा न बनायें।

नुस्ख़ा न०(1) देसी मुर्ग़ी के 20 अन्डों की ज़र्दी, मिस्री 4 तोला, अर्क़ बैदे मुश्क और ताज़ा पानी ज़रूरत के मुताबिक़ लेकर क़िवाम (चाश्नी) बना लें। जायफ़ल, जावित्री चार-चार माशा, ज़ाफ़रान मुश्क एक-एक माशा बरीक कर के मिला लें और दो-दो तोला दूध से सुबह व शाम खायें।

नुस्ख़ा न०(2) भी फ़ायदे मंद है: भुने हुए गेहूँ का आटा मय भूसी के 200 ग्राम गाय के घी में भून लें और अर्क केवड़ा अर्क़ बैदे मुश्क में मिसरी मिला कर पका लें। उसके बाद सालब मिस्री सात तोला, दाल चीनी एक तोला, मुश्क एक माशा, अम्बर एक माशा और ऊपर बताये पके हुए आटे में मिलाकर हल्वा बना लें। दो तोला अर्क़-ए-गज़र के साथ खाऐं।

वीर्य को गाढ़ा करने वाली दवाऐं

जिन पुरुषों का वीर्य पतला हो जाता है तो उन को शीघ्र पतन भी जल्दी हो जाता है। इस शिकायत के लिए पचासों नुस्ख़े मौजूद हैं। सिर्फ़ एक नुस्ख़ा पेशे ख़िदमत है:

मूसली स्याह व सफ़ेद बीज बन्द, ताल मखाना, समन्दर सोख, मौलस्री की

छाल, सिम्भल का गोंद, तुख्मे अटंगन, भूफली, तज, मैदा लकड़ी, मोचरस, तीन-तीन तोले बबूल की फली, गोखरू पन्द्रह-पन्द्रह तोला कूट छान कर बराबर की शकर मिलाकर हर रोज़ एक-एक तोला दूध के साथ खा लिया करें।

खुसूसी नोट व हिदायत

ऐसे मरीज़ को खट्टी चीज़ें हमेशा नुक़्सान पहुँचाती हैं। जैसे इमली, नींबू, सिरका, अचार, खट्टा आम, कच्चा खट्टा टमाटर, हर प्रकार का खट्टा फल वग़ैरह। यंहा तक कि खटाई के पेड़ के नीचे बैठना भी नुक़्सान देता है। खटाई मर्द को नामर्द बनाती है।

किस स्त्री से शादी करनी चाहिए

शादी में ऐसी औरत का चुनाव करना चाहिए जो दीन व मज़हब में नेकी और अमल में शौहर से ऊँची हो यानी दीन दारी में ऊंची हो चाहे दौलत में कम हो या ग़रीब हो और बेहतर है कि लड़की गोल चेहरे की हो तो ज़्यादा अच्छा है, लेकिन ज़रूरी नहीं है। गोल चेहरे लम्बे चेहरे सब एक खुदा के पैदा किए हुए हैं। गोल चेहरे का पोशीदा राज़ मैं लिखने से मजबूर हूँ। लड़की दूर ख़ानदान की हो तो ज़्यादा बेहतर है इसलिए कि बुज़ुर्गों ने बताया है कि क़रीब खानदान यानी चचा, ताऊ, ख़ालू, फूफा मामू, वग़ैरह-वग़ैरह इनकी आपस की रिश्तेदारियों मे मुहब्बत और कशिश कम होती है। और औलाद अक़्ल में और सेहत में कमज़ोर होती है और जहाँ तक हो सके रिश्तेदारी दूर ख़ानदान दूर मक़ाम की हो। ऐसी रिश्तेदारी में मुहब्बत और कशिश ज़्यादा होती है। नाइत्तेफ़ाक़ी कम पैदा होती है। सन्तान अधिक होशियार समझबूझ रखने वाली अक़्लमन्द पैदा होती है। दूसरी वजह यह है कि दूर ख़ानदान में करने से ख़ानदान भी बढ़ता है। लड़की थोड़ी बहुत दुनियावी तालीम और दीनी तालीम भी पढ़ी लिखी होनी चाहिए। बिलकुल अनपढ़ न हो। लड़की का मोटा पतला होना यह बात पति की पसन्द पर है कि किसी को मोटी औरत पसन्द होती है और किसी को बल्कि ज़्यादातर लोगों को पतली औरत पसन्द होती है। आमतौर पर हिन्दुस्तान के लोग पतली औरत को पसन्द करते हैं और अरब के लोग मोटी औरत को पसन्द करते हैं।

हिक्मत का मुफ़ीद वाक़िआ

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं शादी से पहले बहुत दुबली-पतली थी मेरी अम्मी उम्मे रूमान ने मुझे मोटा करने की बहुत कोशिश की और दवाइयां कीं मगर किसी दवा से फ़ायदा नहीं

हुआ चूँकि अरब के लोग मोटी औरतों को ज़्यादा पसन्द करते हैं फिर मेरी अम्मी जान ने यह खिलाया।

पतली-दुबली औरत को मोटा करने के लिए

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि आख़िरकार मेरी अम्मी जान ने मुझे खजूर, खीरे के साथ मिलाकर खिलाई तो उससे मैं मोटी भी हो गयी और अच्छे रंग रूप यानी रंग भी निखर आया!!! लड़की रंग व रूप में और हुस्न व जमाल में भी अच्छी हो।

हर औरत के लिए ज़रूरी हिदायात

हर औरत ख़ासकर जो शादी शुदा हो अपने हुस्नो जमाल को बाक़ी रखे, मैली कुचैली न रहे। शरीर की सफ़ाई करती रहे कि कभी भी शरीर में पसीने की बदबू पैदा न हो। बालों की सफ़ाई हो अपने सर के बालों में रोज़ाना तेल लगाकर बालों को सुधारती रहे जिससे बाल न झड़ें और बढ़ें क्योंकि बालों का लम्बा होना और ज़्यादा घना होना औरत के हुस्न को बढ़ाता है। ऐसी औरत अल्लाह की और फ़रिश्तों की नज़र में भी क़ाबिले तारीफ़ है। फ़रिश्तों की एक जमात अल्लाह के सामने औरत के बालों की तारीफ़ करती है अपनी तसूबीह के अन्दर और मर्दों की दाढ़ियों की तारीफ़ करती है। बहरहाल शरीर की सफ़ाई हो थोड़ा बहुत बनाव सिंगार औरत को ज़रूर रखना चाहिए घर से बाहर निकलने के लिए नहीं और ग़ैरों को दिखाने के लिए नहीं। सिर्फ़ अपने शौहर की निगाह ग़ैर औरतों पर पड़ने से बचाने के लिए ताकि शौहर का दिल दूसरी औरतों पर न जाये। मर्द का दिल अक्सर दूसरी औरतों पर जब ही जाता है जब उसकी औरत भंगन (गन्दी) बनी रहती हो।

यह बात औरतों को ख़ूब समझनी चाहिए

हुज़ूर स०अ०व० ने इरशाद फ़रमाया कि जब रास्ते में अजनबी औरत पर तेरी नज़र पड़ जाये और अच्छी लगे तो तू अपनी नज़र को हटा ले और अपने घर की औरत(बीवी)सेअपनी ख़्वाहिश पूरी कर ले इसलिए कि इस औरत के पास भी वही चीज़ है जो तेरी बीवी के पास है। यह नबी करीम स०अ०व० का फ़रमान है। अब मैं कहता हूँ कि बाज़ारों में फिरने वाली औरतों के पास बनाव सिंगार ज़ैब व ज़ीनत बहुत ज़्यादा है। अब अगर हुज़ूर स०अ०व० के फ़रमान के मुताबिक़ पुरुष अपने घर आया और अपनी बीवी पर नज़र डाली तो देखा कि अपनी बीवी चुड़ैल, चमारन, मैली कुचैली बनी हुई है। अब अगर मर्द का दिल बाज़ारों में फिरने वाली औरतों पर नहीं जाएगा तो और क्या होगा?

अगर उस मर्द ने अपनी ख़्वाहिश हराम औ़रतों से पूरी की तो उसमें असल किसकी ग़लती है। शौहर के इस गुनाह का ज़रिया घर की हलाल औरत ही बनी है।

यह औ़रतों के लिए हिदायत है

मैं अपनी दीनी व इस्लामी तमाम बहनों से अ़र्ज़ करूँगा कि तुम अपने शौहरों की इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करो और ग़ैरों के पास जाकर अपने शौहरों को मुँह काला करने से रोको, वरना शौहर के गुनाह के साथ-साथ तुम भी गुनाहगार होओगी और जब तुम्हारे शौहर को हराम औ़रतों का चस्का पड़ जायेगा, फिर तुम्हें ज़िन्दगी भर रोना पड़ेगा। क्योंकि यह बात सच है कि हराम में लज़्ज़त ज़्यादा होती है। ह़लाल में लज़्ज़त कम होती है।

औरतों के लिए क़ीमती राज़

इस बात को यक़ीनी जानो कि हराम औ़रत कितनी ही बदसूरत काली क्यों न हो और अपनी हलाल बीवी कितनी ही ख़ूबसूरत क्यों न हो, फिर भी कुछ लोगों का दिल हराम औ़रतों पर जल्दी आता है। हाँ अगर मेरी दीनी बहनें काली-कलूटी हों मगर नमाज़ी, मुत्तक़ी, परहेज़ गार, पर्दा नशीन, व हया वाली हों तो उस औ़रत के चेहरे पर उसकी नमाज़ों और तक़्वा, तहारत व इ़बादतों का नूर चमकने व छलकने लगता है। और उस पर शौहर की कशिश व खिचाव पैदा होता है। इस बात का ख़ूब तज़्रिबा है और सौ फ़ीसद बिलकुल सच और हक़ीक़त है कि अल्लाह तआ़ला इ़बादतों का नूर चेहरे पर डाल देता है।

यह हदीसे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम है

यह हदीसे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम है कि अल्लाह पाक उन औ़रतों पर रहम फ़रमाता है जो अपने शौहर को देख कर मुस्कुरायें। इसी तरह अल्लाह तआ़ला रहम फ़रमाता है उस शख़्स पर जो अपनी बीवी को देख कर मुस्कुराता है। बीवी को देखकर मुस्कुराना रसूल स०अ०व० की सुन्नते करीम है यह सब सामान मियां-बीवी में मुहब्बत बढ़ाने का है। और ज़िनाकारी हरामकारी से बचने का है। बहरहाल ख़ास कर इस ज़माने में औ़रत(बीवी) हुस्न, जमाल वाली होनी चाहिए और लड़की (बीवी) शौहर से उ़म्र में कम ही होनी चाहिए बेहतर है कि लड़के की उ़म्र भी लड़की की उ़म्र से बहुत ज़्यादा न हो इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० ने अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा रज़ि० अ़न्हा को अबू बक्र व उमर रज़ि० तआ़ला अ़न्हुमा के

निकाह में उनकी चाहत पर भी नहीं दिया क्योंकि उन दोनों बुज़ुर्ग तरीन सहाबा की उम्र शरीफ़ हज़रत फ़ातिमा रज़ि० तआला अन्हा की उम्र से ज़्यादा थी। फिर आप स०अ०व० ने उम्र के तक़ाज़े के मुताबिक़ हज़रत फ़ातिमा रज़ि० अन्हा को हज़रत अली रज़ि० तआला अन्हु के निकाह में दिया।

किस औरत से निकाह करना चाहिए

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐसी औरत से निकाह करो जिससे बच्चे ज़्यादा पैदा हों शादी से पहले तो इसका इल्म नहीं हो सकता कि इस औरत से बच्चे ज़्यादा पैदा हो सकते हैं या नहीं? तो ऐसी औरत के लिए बस यह देखा जाये कि निकाह में आने वाली लड़की की बहनों की औलाद या उसकी बहनें कितनी हैं या उसके भाईयों की औलाद कितनी हैं अगर उनकी औलाद ज़्यादा हैं तो उम्मीद करो कि इस लड़की से भी औलाद ज़्यादा हो सकती है। जिस लड़की से शादी करनी है वह बाँझ न हो। बाँझ औरत वह कहलाती है जिसमें बच्चे पैदा करने की सलाहियत न हो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि घर के कोने में बोरिया (चटाई) यह ज़्यादा बेहतर है उस औरत से जो बाँझ हो।

शादी से पहले की खुसूसी हिदायतें

जब लड़का या लड़की बालिग़ यानी शादी के लायक़ हो जाये तो वालिदैन को चाहिए कि वह उन से पहले इजाज़त और मश्वरा ज़रूर कर लें ताकि पहले ही पता चल जाये कि उनकी राज़ी व रग़बत है या नहीं? शादी से पहले यह भी देखना और जानना ज़रूरी है कि वह लड़की खाना पकाना, सिलाई कढ़ाई, घर की ज़िम्मेदारियों को निभा सकती है या नहीं। इसलिए कि औरतों के ज़िम्मे घर के तमाम उमूर होते हैं। पैदा होने वाली औलाद का सबसे पहला मदरसा व तरबियत गाह औरत की गोद है।

हर औरत के लिए वर्ज़िश ज़रूरी है

वर्ज़िश (व्यायाम) सेहत को बाक़ी व महफ़ूज़ रखने का बहुत फ़ायदेमन्द तरीक़ा है। व्यायाम करने से बीमारी जल्द हमला नहीं कर पाती, बल्कि कभी-कभी व्यायाम करने से बीमारी समाप्त हो जाती है। व्यायाम करने वाले पुरुष व स्त्री की मिसाल ऐसी है जैसे कि कोई दुश्मनों के दर्मियान रह कर महफ़ूज़ क़िले में महफ़ूज़ हो जाये। इसके बावुजूद हिन्दुस्तानी घरानों में ख़ास कर

मुस्लिम घरानों में ऐसी स्त्रियां हैं जो व्यायाम को ऐब और बुरा जानती हैं। लिहाज़ा मेरा मशवरा है कि हर स्त्री घरेलू कार्य अवश्य करे।

हर औरत के लिए ऐसी वर्ज़िश ज़रूरी है

कि वह कम से कम इतना ज़रूर करे कि अपने कपड़ों के साथ-साथ अपने शौहर के कपड़े, सास-ससुर, अगर वे कमज़ोर हों तो उनकी दिलजोई व हमदर्दी के तौर पर उनके कपड़े और अपनी औलाद के कपड़े धो लिया करे और यह समझ कर धो लिया करे कि यह कपड़े धोना बहुत अच्छी और फ़ायदे मंद वर्ज़िश है। शरीर मज़बूत होता है। घर का काम काज भी संभलता है सास ससुर पति की नज़रों में भली और प्यारी भी हो जायेगी दोनों काम सही हो जायेंगे, व्यायाम का फ़ायदा भी हासिल होता है।

यह बात हर औरत ग़ौर करे

मिसाल के तौर पर हमारे घर के कपड़े धोबी धोता है, मानो पूरे घर के दस कपड़े हफ़्ते में जमा हो गए और इन कपड़ों की धुलाई कम से कम बीस रूपये होती है। अब अगर हमारे घर की स्त्रियां उन कपड़ों को अगर स्वंय धो लिया करें और उन कपड़ों की धुलाई के रूपये खुद शौहर से ले लिया करें और उन पैसो से दूध या ताक़त देने वाले सूखे मेवे या फल इस्तेमाल करें। इसी तरह सिल पत्थर से मसाला पीसना भी वर्ज़िश है, घर में झाड़ू देना भी वर्ज़िश है, वग़ैरह-वग़ैरह। इसलिए मैं अपनी तमाम बहनों से अर्ज़ करूंगा कि अपने घर के काम-काज खुद किया करें। ताकि सेहत व तन्दरूस्ती भी बाक़ी रहे।

इन औरतों से निकाह नहीं करना चाहिए

दानिशवरों ने कहा है कि इन औरतों से निकाह नहीं करना चाहिए। (1) जो औरत हर समय करहाती हो और आह-आह करती रहती हो और हर समय अपना सर पट्टी से बाँधे रहे यानी हर समय बीमार रहती हो तो उसके निकाह में बरकत नहीं रहती। (2) वह औरत जो एहसान जताने वाली हो (3) वह औरत जो अपने पहले पति पर आशिक़ हो ऐसी स्त्री से भी बचना चाहिए (4) वह औरत जो हमेशा बनाव सिंगार की दीवानी बनी रहती हो (5) वह औरत जो मुँह फट बकवास करने वाली हो (6) जवान मर्द को बूढ़ी औरत से सम्भोग करने से कमज़ोरी व सुस्ती पैदा होती है। दानिशवरों ने कहा है कि जवान बीवी से सम्भोग करने से ताक़त क़ायम रहती है और जब वह बूढ़ी हो जाती है तो हानिकारक साबित होती है।

सम्भोग करने की खास हिदायतें

सम्भोग के क़ायदों को जानना हर शादी-शुदा स्त्री पुरूष को आनवार्य है। जो व्यक्ति इन तरीक़ों से अनभिज्ञ हो तो वह व्यक्ति और हैवान, (जानवर) दोनों बराबर हैं और ऐसे नादान ग़ाफ़िल को जिसको सम्भोग करने का तरीक़ा पता न हो ऐसे पति-पत्नी का मिलना सम्भोग (मुबाश्रत)नहीं कहलायेगा। बल्कि वह जुफ़्ती यानी जानवरों का मिलना कहलायेगा। जैसे जानवरों के लिए कोई क़ायदा क़ानून नहीं है उनके मिलने को जुफ़्ती कहते हैं लिहाज़ा हम उन उसूलों का ज़िक्र करेंगे जो फ़ायदेमंद हैं और आवश्यक हैं ताकि इस चीज़ से अज्ञाताओं को पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो।

सम्भोग करने के उसूल

सम्भोग दिन हो या रात हर समय किया जा सकता है। मगर ज़्यादा अच्छा है कि दिन की बजाये रात में ही सम्भोग किया जाये। जिस रात में सम्भोग करना हो तो अधिक बेहतर है कि दिन में पहले इसका ज़िक्र पति-पत्नी के बीच हो जाना चाहिये ताकि पत्नी अपने पति के लिए पहले अच्छी तरह श्रंगार कर ले और अपनी गंदगी के मक़ामात को साफ़ कर ले और पत्नी पहले से ही अपनी तैयारी कर ले ताकि पति के जज़्बात के साथ वह भी अपनी ख़्वाहिश पूरी कर ले जैसे कि इन्ज़ाल होने में औरत को आसानी हो क्योंकि इन्ज़ाल भी दिल और दिमाग़ के जज़्बे के साथ जल्दी होता है। जिस रात में सम्भोग(मुबाश्रत) किया जाये तो अधिक अच्छा है कि दिन में थोड़ा आराम कर लिया जाये ताकि रात को नींद की वजह से जज़्बात में फ़र्क़ न आये।

सम्भोग करने की जगह

सम्भोग जहाँ तक हो सके छुपी हुई जगह में हो और उस जगह में हो जहाँ छत भी ऊपर से हो। और उस जगह पर किसी के आने-जाने का ख़तरा भी न हो और वहाँ पर कोई ऐसा बच्चा भी न हो जो सम्भोग की बातों को जानता और समझता हो अगर कोई छोटा बच्चा हो भी तो जागा हुआ न हो बल्कि वह गहरी नींद में सोता हो और मुनासिब यह है कि ऐसी जगह हो जहाँ जानवर भी न हो बिलकुल अलग जगह हो हुज़ूरे अक़्दस स०अ०व० ने इरशाद फ़रमाया जो शख़्स स्त्री के पीछे के मक़ाम में सम्भोग करे वह शैतान मलऊन व मरदूद है।

सम्भोग के समय के वस्त्र

सम्भोग के समय बिलकुल नंगा होना पसंदीदा नहीं है। क्योंकि

बिलकुल नंगा होने से जो औलाद पैदा होगी उस के बे-हया और बेशर्म होने का अंदेशा है। हुज़ूरे अक़्दस स०अ०व० ऐसे मौक़े पर अपना सर मुबारक भी कपड़े से ढक लिया करते थे। आवाज़ मुबारक बहुत हल्की कर लेते थे और बीवी से कहते थे कि इत्मीनान और सुकून से रहो और आप ने तरीक़ा बयान किया कि जब स्त्री पुरुष सम्भोग करें तो गधों की तरह बिलकुल नंगे न हुआ करें। रिवायत में है कि अपने आप को और अपनी बीवी को किसी कपड़े से ढाँप लो।

सम्भोग के समय की सावधानियाँ

सम्भोग के समय बुज़दिली इख़्तियार न करें वरना औलाद भी बुज़दिल पैदा होती है। सम्भोग के समय अपनी बीवी के अलावा किसी और औरत का ख़्याल न लाये वरना शरीअ़त में गुनाहगार लिखा जायेगा बीवी भी अपनी हो और तसव्वुर भी अपनी बीवी का ही हो। सम्भोग के समय ज़्यादा बाते न करे वरना होने वाली औलाद की ज़बान में गूंगा पन पैदा होने का डर है सम्भोग के समय क़िब्ले की तरफ़ मुँह न करे कि इससे काबातुल्लाह की बेहुरमती करने वाला शुमार होगा। सम्भोग के समय शर्मगाह को न देखे इससे आँखों की कमज़ोरी पैदा होती है और हमेशा शर्मगाह (योनि) को देखने से भूलचूक की बीमारी का खतरा होता है। सम्भोग करते समय दीनी-इस्लामी किताबों पर पर्दा डाल देना चाहिए। सम्भोग करते समय किसी बदसूरत बच्चे का खयाल दिल में न लाये वरना होने वाला बच्चा उसी सूरत का हो सकता है।

यह अजीब इबरत का वाक़िआ है

एक व्यक्ति के यहाँ बच्चा पैदा हुआ, बच्चे का मुँह साँप की शक्ल का था और नीचे टांगों की तरफ़ का बदन इन्सानी शक्ल का था। माँ अपने इस बच्चे को दूध पिलाने से भी डर रही थी। एक बुज़ुर्ग हकीम को बताया गया तो बुज़ुर्ग हकीम साहब ने फ़रमाया कि ऐसा मालूम होता है कि जिस सम्भोग के ज़रिये इरू बच्चे का गर्भ ठहरा है उस समय पति या पत्नी में से किसी एक के दिमाग़ (ख्यालात) में साँप का तसव्वुर था। बच्चे के माता-पिता में से एक ने कहा कि हकीम साहब ने सही बताया। उस समय साँप का ख्याल आ गया था।

इन हालात में सम्भोग नहीं करना चाहिए

माहवारी के समय में सम्भोग नहीं किया जाये। माहवारी के समय में सम्भोग करना शारीरिक तबाही व बरबादी का सबब है इस लिए इन दिनों में न मिलें। क्योंकि इस खून में ज़हरीला पन होता है जिससे बड़ी पैचीदा और खतरनाक बीमारियाँ पैदा होती हैं। माहवारी के दिनों में सम्भोग करने से

ख़ारिश, नामर्दी, शर्मगाह और उसके मुहँ पर जलन (सोज़ाक), जिरयान होता है और जो बच्चा पैदा होता है उसके शरीर की बाहरी त्वचा पर ज़ख्म बन जाते हैं और उन ज़ख्मों से पानी रिसता रहता है। माहवारी वाली स्त्री को अक्सर खून बहता रहता है और बच्चे दानी बाहर निकल आती है और कभी-कभी कुछ औरतों को गर्भपात की बीमारी लग जाती है और बच्चे दानी कमज़ोर हो जाती है और विभिन्न प्रकार की खतरनाक बीमारियों में फंस जाती हैं। माहवारी का खून अन्दर की नापाकी और गन्दगी को बाहर निकालता है। यह प्रक्रिया क़ुदरती तौर पर होती है इस माहवारी के खून में ज़हरीलापन और तेज़ाबियत हाती है और स्त्री की योनि का मिज़ाज इन दिनों में मामूली न रह कर गर्म हो जाता है। स्त्री जब तक नापाकी से पाक न हो बेहतर है कि जब तक नहा न ले उससे सम्भोग न करें। ज़्यादा काम काज में घिरे होने पर, नींद के अधिक आने के समय ज़्यादा थके हुए होने के समय, रंजो ग़म, ख़ौफ़ और अंदेशे के समय, नशे के समय, पेशाब या पख़ाना लगते समय, इन तमाम वक़्तों में सम्भोग नहीं करना चाहिए। बिल्कुल पेट भरा होने पर और बिल्कुल पेट ख़ाली होने पर सम्भोग न करें। भरे पेट पर सम्भोग करने से आँतों और मेदे पर सूजन आ जाती है,दानिशवरों ने कहा है कि भरे पेट पर सम्भोग करने से शुगर की बीमारी पैदा हो जाती है और शरीर को कमज़ोर बना देती है। बिलकुल ख़ाली पेट भी सम्भोग करना खतरनाक है इसलिए कि वीर्य निकलने के बाद अन्डकोष अपनी खुराक गुर्दों से माँगते हैं और गुर्दे अपनी ग़िज़ा जिगर से माँगते हैं और जिगर अपनी खुराक मेदे से माँगता है लिहाज़ा भूख की हालत में मेदे के बिलकुल ख़ाली होने की वजह से बुढ़ापा, टीबी, दिल घबराना, आँखों की कमज़ोरी आदि बीमारियों का ख़तरा बढ़ जाता है। बीमारी से फ़ायदा होने के बाद जब कि कमज़ोरी अभी बाक़ी हो तब भी सम्भोग न करें। बेचैनी और परेशानी व घबराहट के समय भी सम्भोग नहीं करना चाहिए। पागल या दीवाने पन की हालत में, मिरगी की बीमारी वाले, टीबी के मरीज़, दिल के मरज़ में मुब्तला (फंसा हुआ) को भी सम्भोग नहीं करना चाहिए। ज़्यादा दिमाग़ी मेहनत करने वाले और वे जिनको आँखों की कमज़ोरी, शारीरिक दुर्बलता और जिनको मेदे व जिगर की कमज़ोरी हो उनको भी सम्भोग करने से नुक़्सान होता है। बवासीर के मरीज़ आतशक सोज़ाक के मरीज़ों को भी मुबाशरत से बचना चाहिए। ताऊन और गन्दी हवाओं के चलते समय भी सम्भोग से बचें। अक़्लमन्दों ने कहा है कि जो व्यक्ति चाँद की ग्यारह तारीख़ को सम्भोग करता है वह अपनी

ज़िन्दगी को कम करता है। बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि चाँद कि पहली रात और दर्मियानी रात और बिलकुल आख़िरी रात यानी महीने के ख़त्म की रात को सम्भोग न किया जाए क्योंकि इन अवसरों पर शैतान मौजूद होते हैं और कुछ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि इन तीनों रातों में शैतान सम्भोग किया करते हैं और यह कि इन रातों में सम्भोग करने से जो औलाद पैदा होती है वह लाग़र (कमज़ोर) अंग-भंग पैदा होती है बालिग़ होने से पहले अगर गर्भ रूक गया तो वह औलाद भी बीमार पैदा होती है। रात के शुरू में सम्भोग करने से जो औलाद पैदा होगी उसकी उ़म्र बहुत थोड़ी होती है रात के आख़िरी भाग में सम्भोग करने से जो औलाद पैदा होती है वह तंदरूस्त व ताक़त वर पैदा होती है।

सम्भोग के क़ानून का बयान

स्त्री पुरूष के आपस में अपनी नफ़्सानी ज़रूरत को पूरा करने को मुबाशरत , हमबिस्तरी, जिमा वग़ैरह-वग़ैरह अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। मगर हम अपनी इस किताब में मुबाशरत (सम्भोग)ही इस्तेमाल करेंगे जिसके माने हैं: खालों का आपस में मिल जाना। मर्द औ़रत के आपस के मिलाप को मुबाशरत (सम्भोग)इसीलिए कहते हैं कि यह तबई (प्राकृतिक) अ़मल है। लेकिन मुबाशरत के लिए उ़म्र और हद है । उसूल के साथ सम्भोग करने से इन्सान बहुत सी बीमारियों से बचा रहता है और बे उसूली के साथ सम्भोग करने से वह बेशुमार बीमारियों में फँस जाता है और उसके नुक़्सानात भी बहुत ज़्यादा होते हैं।

सम्भोग कितने दिनों में करना चाहिए

कहानी है कि किसी शख़्स ने हकीम सुक़्रात से पूछा कि सम्भोग (सहवास्) तन्दरूस्त व्यक्ति को कितने दिनों के बाद करना चाहिए। हकीम सुक़्रात ने जवाब दिया, साल में एक बार फिर उस शख़्स ने पूछा अगर ताक़त व जोश अधिक हो और इतने पर सब्र न हो सके फिर हकीम सुक़्रात ने जवाब दिया कि महीने में एक बार। फिर सवाल करने वाले ने पूछा अगर उस पर भी बर्दाश्त न हो सके ताक़त व जोश ज़्यादा हो तो हकीम साहब ने फ़रमाया हफ़्ते में एक बार फिर उस सवाली ने पूछा कि अगर इतने दिनों पर भी सब्र न हो सके तो हकीम साहब ने सख़्ती से जवाब दिया और कहा कि वीर्य शरीर का तेल और रूह है अगर कोई इस पर भी सब्र न करे तो फिर वह इन्सान अपनी रूह को निकाल कर फेंक दे और ज़िन्दगी से हाथ धोकर मुर्दों की लाइन में शरीक हो

जाये और अपनी क़ब्र तैयार रखे।

बहरहाल सम्भोग में बीच का रास्ता इख़्तियार करे न बिलकुल ही तर्क करे और न ज़्यादा, नहीं तो दोनों हालतों में नुक़्सान ही होता है। कुछ हकीमों ने सम्भोग (सहवास) में तीन दिन का फ़ासला बताया है। इससे पहले सम्भोग न किया जाये जैसे बग़ैर भूख के खाना खाने से नुक़्सान होता है। इससे अधिक हानि सम्भोग बग़ैर ज़रूरत करने से होता है। इसलिए सम्भोग की भूख का ख़्याल रखना चाहिए।

सम्भोग की भूख की पहचान

सम्भोग की भूख की पहचान यह है कि बिना किसी सम्भोग की बात का ख़्याल लाये जोश व गर्मी पैदा होने लगे और लिंग में सख़्ती बढ़ने लगे तो समझ लो कि यही सम्भोग की भूख है।

भूख और बग़ैर भूख के सम्भोग करने के फ़ायदे व नुक़्सानात

सम्भोग की भूख के साथ जो सहवास किया जाएगा तो उससे ताज़गी व सुरूर बल्कि अक़्ल भी अधिक होती है और बे-भूख सम्भोग अगर किया जाये तो उससे शरीर में सुस्ती पैदा होती है और दिमाग़ से याद दाश्त कम हो जाती है और वीर्य निकलने से दिल में ख़ुशी के बजाये मिज़ाज में चिड़चिड़ापन व क्रोध सा पैदा होने लगता है और सम्भोग के बाद नदामत काहिली, शर्मिंदगी व अफ़सोस प्रकट होता है और सम्भोग ज़्यादा करने से बहुत ज़्यादा कमज़ोरी व सुस्ती होने लगती है। चूँकि व्यक्ति लज़्ज़त का दीवाना है वह लज़्ज़त हासिल करने के लिए बार-बार सम्भोग के मज़े में डूबा रहता है। स्त्री गर्भ के नौ (9) महीने की तक्लीफ़ बर्दाश्त करती है। बच्चा पैदा होने की तक्लीफ़ सह लेती है लेकिन सम्भोग की लज़्ज़त के मुक़ाबले में गर्भ ठहरने की और बच्चा जनने की परेशानी की तक्लीफ़ भूल जाती है। यही कारण है कि जो व्यक्ति एक बार सम्भोग का ज़ायक़ा जान लेता है तो फिर इसे छोड़ नहीं पाता और इसकी आग तेज़ होने लगती है। इसलिए आवश्यक है कि दरमियानी तरीक़े से इस को क़ायम रखे जैसे दूसरे कामों के अन्दर बीच की राह इख़्तियार करता है और करनी भी चाहिए इसी तरीक़े से सम्भोग का सिलसिला अपनाये।

सम्भोग कितने दिनों में करना चाहिए

सम्भोग के समय की अधिकता को तो तय नहीं कर सकते। जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं कि हर व्यक्ति में यह सहन शक्ति अलग-अलग होती है

इसलिए हर शख़्स को अपनी-अपनी मर्दानगी का ख़्याल रखना चाहिए। सम्भोग के लिए कब किस समय कितने दिनों के बाद सहवास करना बेहतर होगा यह बात हिक्मत के तौर पर इतनी कही जा सकती है कि जब तबीअ़त में ज़ोर हो जाए और मर्द के लिंग में तनाव बढ़ जाये और अपने आप जोश पैदा होने लगे तो जान लेना चाहिये कि सम्भोग का यही समय उपयुक्त है अगर व्यक्ति इस अंदाज़े के साथ सम्भोग करता रहेगा तो लम्बी उ़म्र तक इसके आनन्द में उ़म्र गुज़ारता रहेगा। और इससे मायूस नहीं होगा।

अत्याधिक सम्भोग करने के नुक़्सानात

बहुत से व्यक्ति जवानी में दीवाने बन कर इसकी हद को पार कर जाते हैं और आगे आने वाली ज़िन्दगी में सम्भोग के आनन्द से महरूम हो जाते हैं। इसलिए अपना ऐसा तरीक़ा अपनाये ताकि आगे आने वाली उ़म्र में भी यह सिलसिला क़ायम रहे। आगे की उ़म्र में फ़र्क़ तो ज़रूर पड़ता है लेकिन इतना तो फ़र्क़ नहीं आना चाहिए कि जवानी में हीरो आगे चलकर ज़ीरो यानी आधी उ़म्र से पहले ही नामर्द बन गये। सम्भोग की अधिकता से अपने आप को मौत का निवाला बना लेते हैं। फिर ऐसे लोगों के दिल व दिमाग़ कमज़ोर हो जाते हैं शरीर का रंग पीला पड़ने लगता है। दिल, दिमाग़, मैदा, जिगर आंतें, गुर्दे सब कमज़ोर हो जाते हैं। कभी जिगर पर वर्म पेट में पानी की बीमारी,फ़ालिज, राशा वग़ैरह हलाक करने वाली बीमारियां ख़ासकर भूलचूक की बीमारी पैदा हो जाती है। आख़िरकार शरीर सुस्त और कमज़ोरी बढ़ जाने की वजह से व्यक्ति मायूस हो कर मौत के कड़वे प्याले को खुद अपने हाथों से पीने पर मजबूर हो जाता है और कभी-कभी ऐसे व्यक्ति की ज़िन्दगी मौत से बदतर हो जाती है अपनी बीवी बच्चों से नफ़रत करने लगता है। बल्कि ऐसी हालत में बीवी और बच्चे उससे खुद ही नफ़रत करने लगते हैं।

सम्भोग के आदाब व उसूल

सहवास या सम्भोग के लिए साफ़ सुथरी जगह राहत व आराम देने वाली जगह सोने व रात गुज़ारने के लिए तय करें। और बेहतर यह है कि खुशबू या इत्र का प्रयोग करें क्योंकि इससे दिल और दिमाग़ को आराम मिल कर सम्भोग की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है। इत्र व ख़ुशबू दिल व दिमाग़ को आराम पहुँचाने में बेहतर साबित होती है तथा सम्भोग की जगह पर किसी के आने-जाने का ख़तरा भी नहीं होना चाहिए क्योंकि इससे जोश व आनन्द में कमी आती है और पूरी आज़ादी से वह समय गुज़ारना चाहिए। स्त्री को चाहिए

कि पूरे श्रंगार के साथ साफ़-सुथरी होकर सम्भोग की जगह हाज़िर हो फिर मर्द को चाहिए की पहले कुछ देर थोड़ी मीठी व नमकीन नर्म-नर्म प्यार की बातें करे और आपस में हंसी मज़ाक़ और बोसो कनार, चुम्बन करते हुए प्यार मुहब्बत बढ़ाने वाली अदाऐं और अंदाज़ से एक-दूसरे पर आशक्त बनकर उस मौक़े को खुशगवार बनायें ताकि दिल से दिल को राहत मिले और पति-पत्नी के सहवास की उंमग बढ़े। अक़्लमन्द स्त्री को चाहिये सम्भोग से पहले ठंडे पानी से योनि को धो ले, ताकि स्त्री की योनि सुकड़ जाये और उसके बाद योनि की जगह से पानी को पोंछ कर खुश्क कर ले और इत्र या खुश्बू उस जगह पर लगा ले और बिस्तर पर आ जाये और फिर खास काम को पूरा करने में मशग़ूल हो जायें।

मुबाश्रत (सम्भोग) के आदाब

सम्भोग के आदाब में यह भी है कि स्त्री की योनि को न देखा जाए क्योंकि योनि को देखने से मर्द का जोश तो बढ़ता है लेकिन आँखों को नुक़्सान पहुँचता है आँखों की रोशनी कमज़ोर होती है। फिर मर्द अपने लिंग के सिरे को स्त्री की योनि में दाख़िल करके रोके रखे ताकि स्त्री की चाहत बढ़े और आँखों में सुरूर पैदा हो कर ज़ाहिर हो जाये फिर मर्द अपने पूरे लिंग को तेज़ी के साथ दाख़िल करे लेकिन अधिक ज़ोर से दाख़िल न करे क्योंकि अधिक ज़ोर से हरकत करने में कुछ स्त्रियों की बच्चे दानी में बीमारी लग जाती है और बहुत तेज़ी के साथ झटके से हरकत करना मक्रूह भी है और मना है लेकिन स्त्री अगर इससे राज़ी हो और पसन्द करे तो फिर मक्रूह नहीं है और जब पुरूष को वीर्य निकलने का एहसास होने लगे तो औरत के वीर्य निकलने का भी इन्तिज़ार करे। (इसका तरीक़ा आगे बताया जायेगा)

शौहर को अगर बीवी से पहले वीर्य निकलने लगे तो जब तक बीवी का वीर्य न निकले हरकत करता रहे और जब स्त्री की पकड़ ढीली हो जाए तो जान लेना चाहिये कि स्त्री को भी इंज़ाल हो गया। वीर्य निकलने के बाद स्त्री बिस्तर पर इसी तरह लम्बी होकर लेटी रहे ताकि मर्द का वीर्य स्त्री की बच्चे दानी में दाखिल हो सके स्त्री जल्दी उठने या हरकत करने या छींकने या फ़ौरन पेशाब करने से रूकी रहे और बची रहे। सम्भोग करने का बेहतरीन तरीक़ा क़ुरआन, हदीस व बहुत से हकीमों ने यह बयान किया है कि स्त्री कमर के बल सीधी लेटे और मर्द उसकी दोनो टांगों के दर्मियान आकर सम्भोग की क्रिया शुरू करे। इस तरीक़े के अलावा हिन्दुस्तान के हकीमों ने छत्तीस शक्लें व सूरतें

बयान की हैं। अगरचे इन तमाम तरीक़ों से सम्भोग करने से लज़्ज़त तो महसूस होती है लेकिन ये तरीक़े स्त्री पुरुष में विभिन्न प्रकार के गुप्त रोगों की जड़ बन कर स्त्री पुरुष को नुक़्सान पहुँचाने का सबब बन जाते हैं और अक्सर इन छत्तीस प्रकार की क्रियों से गर्भ ठहरने का अवसर नहीं मिलता। ख़ासतौर पर इस सूरत में कि मर्द औरत की जगह पर नीचे हो और औरत मर्द के उपर हो इस क्रिया से लज़्ज़त तो अधिक होती है लेकिन इस सूरत में मर्द का वीर्य निकल कर उल्टा बह कर वापस आ जाता है।

बुक़रात, जालीनूस, और अरस्तू इन तीनों हकीमों ने इस बात पर एक मत होकर कहा है कि औरतें अधिक लम्बे समय तक सम्भोग न होने की वजह से तप व इख़्तिनाक़ुर्रहिम जैसी बीमारियों में फंस जाती हैं यानी शरीर में बुख़ार और बच्चेदानी में बहुत सी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं और इनका बेहतरीन इलाज सम्भोग क्रिया ही है।

अत्याधिक फ़ायदे मंद गुप्त भेद

अक़्लमन्द पति को चाहिए कि जब तक स्त्री को इंज़ाल (वीर्य निकलना) न हो जावे उससे अलग न हो अगर मर्द का वीर्य निकलना शुरू हो जाये तो फ़ौरन साँस तेज़ी के साथ ऊपर की जानिब खींचे और थोड़ा ठहर जाए ताकि वीर्य अपने स्थान पर ही रुका रहे फिर एक दम अचानक सम्भोग की क्रिया शुरू कर दे और सहवास के समय उसके होंटों का बोसा (चुम्बन) ले और उसके पिस्तानों के सिरे की धुन्डियों को मसले और लिंग के सिरे से बच्चेदानी के मुँह को रगड़े, इन हरकतों से स्त्री को जल्दी इंज़ाल हो जाता है। और जब स्त्री को इंज़ाल होने लगता है तो उसकी हालत बदल जाती है और साँस ज़ोर से लेती है और जब स्त्री को इंज़ाल हो जायेगा तो वह अपने पति से दिलो जान से मुहब्बत करने लगेगी इस प्रकार मर्द अपनी बीवी से सहवास करेगा तो औरत सदैव उससे खुश रहेगी और ज़िन्दगी का फल और फूल भी सामने आ जाता है, प्रक्रिया जो बयान की गई है स्त्री को अपना दीवाना करने के लिए बिलकुल सच्ची तरकीब है।

औरत को सम्भोग के लिए तैयार करने का तरीक़ा

जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं कि सम्भोग करने में मर्द के लिए आवश्यक है कि अपनी पत्नी को सम्भोग करने के लिए तैयार करे और इसके अनेक तरीक़े हैं जो हर स्त्री के अलग-अलग भाव होते हैं हर मर्द अपनी बीवी के इन भावों को स्वंय ही समझ सकता है। दानिशवरों

ने कहा है कि सम्भोग के लिए पहले स्त्री को राज़ी करना चाहिए।

यह हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से कोई अपनी बीवी के पास जाने से पहले क़ासिद भेज दिया करे। सहाबा किराम रज़ि० ने मालूम किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ासिद भेजने का क्या मतलब है तो फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि पहले नर्म-नर्म मीठी-मीठी बातें करना प्यार और मुहब्बत का अंदाज़ इख्तियार करना, चुम्बन लेना प्यार के साथ लिपटना और फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कि पशुओं की तरह से एकदम न मिले बल्कि उसकी काम वासना को उभारे।

स्त्री के अलग-अलग अंग काम वासना को उभारते हैं

स्त्री के कुछ शारीरिक अंग ऐसे होते हैं जो काम वासना को उभारते हैं जैसे कि कुछ स्त्रियों के बालों पर नर्म-नर्म हाथ फेरने से उनकी उत्तेजना बढ़ती है और कुछ को प्यारे-प्यारे लतीफ़े और वारदातें सुनाने से काम वासना बढ़ती है और कुछ को गर्दन के दायें बायें चूमने लिपटने से काम वासना बढ़ती है कुछ को हंसी-मज़ाक़ और गुदगुदी करने से यह सुरूर पैदा हो जाता है हकीमों ने इस बात पर ज़्यादा इत्तिफ़ाक़ किया है कि स्त्री पिस्तानों के पकड़ने से बहुत जल्दी काम वासना को तैयार हो जाती है। बहरहाल पुरुष को ऐसा तरीक़ा अपनाना चाहिए जिससे स्त्री में जल्दी काम वासना उभरे।

ख़ास गुप्त भेद

इस बात को खूब समझ लेना चाहिये कि अगर मर्द को स्त्री से पहले ही इंज़ाल हो गया यानी वीर्य निकल गया और स्त्री को इंज़ाल नहीं हुआ तो ऐसी हालत में गर्भ नहीं ठहर सकता लिहाज़ा बहुत से ऐसे वाक़िआत सामने आये हैं और आते हैं कि मर्द को इंज़ाल हुआ और औरत को नहीं हुआ जिसकी वजह से औलाद से महरूमी रही लिहाज़ा औलाद की इच्छा रखने वालों के लिए यह खुसूसी राज़ की बात है कि मर्द अपने इंज़ाल के साथ औरत के वीर्य निकलने का भी ख्याल रखे। स्त्री की ख्वाहिश पूरी होने का इन्तिज़ार भी करे। सिर्फ़ अपनी ख्वाहिश पूरी करके स्त्री से अलग न हो वरना स्त्री को तक्लीफ़ व रंज पहुँचता है और उसके दिल को ठेस पहुँचती है और वह स्त्री अपने पति की दुश्मन बन जाती है। हुज़ूर स०अ०व० ने फ़रमाया कि मर्द के मुक़ाबले औरत में 99 हिस्से अधिक काम वासना होती है मगर औरतों का मिज़ाज सर्द होता है जिसके कारण औरत अपनी ख्वाहिश को खुलकर ज़ाहिर नहीं कर पाती और उस काम

वासना को दिल में दबा कर रह जाती है खुलकर नहीं कह पाती।

दुनिया के फ़नाह होने का समय आ गया है

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि औ़रतों पर शर्मो हया का पर्दा डाल दिया गया है मगर आज वह पर्दा चाक-चाक हो गया है। यह भी फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कि दुनिया के मिटने और ख़त्म होने के क़रीब का समय ऐसा होगा कि बेहयाई इस क़द्र बढ़ जायेगी कि सरेआम रास्तों में ज़िना (बलातकार) हुआ करेगा।

इस ज़माने का बिलकुल सच्चा वाक़िआ

सन् 1419 हिजरी यानी सन् 1998 का वाक़िआ है कि एक साहब जुम्ए की नमाज़ के बाद मेरे पास आये और फ़रमाने लगे कि आज मेरे बेटे की बीवी तलाक़ मांग रही है। मैंने पूछा किस वजह से क्या बात हुई? तो उन्होंने बताया कि सिर्फ़ इस बात पर कि वह औ़रत यह तक़ाज़ा करती है और ऐब लगाती है अपने शोहर पर कि वह एक रात में चार बार सम्भोग नहीं कर पाते इनमें कमज़ोरी है। जिसकी वजह से मेरा और मेरे शौहर का निबाह नहीं हो सकता। बहरहाल इस ज़माने में शौहर को अपनी बीवी की काम वासना पूरी करनी ज़रूरी है और बहुत ज़रूरी है।

स्त्री को इंज़ाल कराने की शक्ल (तरीक़ा)

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि जिस तरह मर्द को इंज़ाल होना ज़रूरी है उसी प्रकार गर्भ ठहरने के लिए स्त्री का वीर्य निकलना भी ज़रूरी है जिस प्रकार इंज़ाल न होने की तक्लीफ़ मर्द को होती है इसी तरह औ़रत को भी होती है आमतौर पर अक्सर मर्दों को जल्दी इंज़ाल होता है क्योंकि मर्द के मिज़ाज में गर्मी होती है औ़रत को इंज़ाल जल्दी नहीं होता क्योंकि उसके मिज़ाज में ठंडक होती है औ़रतों को इंज़ाल कराने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि मर्द सहवास से पहले स्त्री का चुम्बन, मीठी बातें और दिल में जोश पैदा करने वाली अदाऐं व बातें करे। छेड़छाड़ में ज़्यादती करे फिर बाद में सम्भोग करे।

स्त्रियों के इंज़ाल को पहचानने का तरीक़ा

मर्द और औ़रत का वीर्य आपस में मिलकर गर्भ ठहरता है औ़रत के इंज़ाल पहचानने का तरीक़ा यह है कि या तो औ़रत खुद ज़ाहिर करे कि मुझे इंज़ाल हो गया है। शर्मो हया वाली स्त्रियां अपने मुँह से यह बात नहीं कह पातीं बल्कि उनके हाव-भाव से यह पता चल जाता है इसलिए औ़रत के इंज़ाल होने

की पहचान यह है कि अगर औरत अपने शौहर को लगातार पहले की तरह पूरे जोश के साथ लिपटी व चिपटी रहे और उसकी पकड़ ढीली न हो तो समझो औरत को अभी इंज़ाल नहीं हुआ और अगर मर्द को सहवास करते समय औरत की पकड़ ढीली पड़ जाए और लिपटने पकड़ने में सुस्त हो जाये तो समझ लेना चाहिये की औरत को इंज़ाल हो गया है।

सम्भोग करने की शक्ल

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि सम्भोग करने के बहुत से तरीक़े हैं लेकिन उन सब में सही और बेहतरीन तरीक़ा और गर्भ ठहरने के लिए ज़्यादा कामयाब यह है कि स्त्री चित लेटे और पुरूष ऊपर मिस्ल ढक्कन के जैसा कि क़ुरान करीम में है कि जब शौहर ने अपनी बीवी को ढांप लिया तो वह हामिला हो गई यानी गर्भवती हो गयी। इस हालत में जैसे किसी बर्तन वग़ैरह को ऊपर से उस के मुनासिब ढक्कन से ढक दिया तो इस हालत में मर्द का लिंग अपने सही मुक़ाम पर पहुँच जाता है और वीर्य बच्चे दानी के क़रीब गिरता है और इस प्रकार मर्द के वीर्य के शुक्राणु स्त्री के वीर्य में मिलकर बच्चे दानी में प्रवेश कर जाते हैं और उनके लिए अधिक दूरी नहीं होती। इस प्रकार सम्भोग करने के अलावा और तरीक़े ग़ैर सही और तक्लीफ़ देने वाले हैं क्योंकि इसके अलावा स्त्री किसी करवट पर लेटती है या बेठती है या औंधे मुँह रहती है या मर्द के ऊपर रहती है इन तमाम सूरतों में गर्भ ग्रहण करने के मौक़े बहुत कम होते हैं क्योंकि इन हालतो में अक्सर वीर्य बाहर को बह जाता है और कुछ हालतों में तो लिंग की नालियों में भी कुछ वीर्य बाक़ी रह जाता है और सड़ जाता है जो खतरनाक बीमारियों का सबब होता है। सेहत व तंदरूस्ती बाक़ी रखने के लिए सम्भोग आवश्यक भी है लेकिन इसी के साथ-साथ सही उसूल के साथ होना चाहिए।

सम्भोग करते समय कुछ ख़ास काम

सहवास के समय शौहर की हरकत के साथ-साथ बीवी को भी हरकत करना ज़रूरी है। औरत बिल्कुल बे हरकत न रहे हालाँकि असल हरकत शौहर की ही होती है जिसकी वजह से शौहर को इंज़ाल जल्दी हो जाता है और औरत को देर से होता है अगर **औरत** अपने शौहर की क्रिया के साथ क्रिया करे तो औरत के इंज़ाल **(वीर्य निकलने)** में आसानी होगी और मर्द तथा औरत दोनों के लिए आसानी व सहूलत हो जायेगी। खूब याद रखें।

सम्भोग के बाद पेशाब ज़रूर करना चाहिए

सम्भोग के बाद पेशाब ज़रूर कर लेना चाहिए ताकि लिंग की नालियों

में वीर्य का कोई क़तरा बाक़ी न रह जाये। वीर्य का अंश बाक़ी रहने से लिंग के अन्दर ज़ख्म बन सकता है जिसके कारण बड़ी तक्लीफ़ हो सकती है और उसके इलाज में भी बड़ी मुश्किल हो जाती है।

सम्भोग के बाद पेशाब करने का तरीक़ा

सम्भोग के बाद पेशाब करने का तरीक़ा यह है कि पेशाब करते-करते फ़ौरन बीच में रोक लें और फिर एकदम से पेशाब करें फिर पेशाब करते-करते रोक लें फिर फ़ौरन पेशाब करें इस प्रकार पेशाब को दो-तीन बार बीच में रोककर करें ऐसा करने से लिंग की नालियों में रुके हुए वीर्य के अंश पेशाब के साथ बाहर निकल जायेंगे और मुत्राशय की बीमारियों से बड़ी हद तक बचा जा सकेगा।

सम्भोग के बाद गुप्तांगों को धोने का तरीक़ा

सम्भोग के बाद ठंडे पानी से गुप्तांगों को कभी नहीं धोना चाहिए वरना इससे बुख़ार का ख़तरा रहता है और लिंग की बीमारियों का भी ख़तरा बन जाता है। या तो गुनगुने पानी से गुप्तांगों को धोयें या मिट्टी के ढेले से इस्तिंजा सुखायें।

सम्भोग के बाद क्या खाना चाहिए

सम्भोग करने के बाद कोई ऐसी चीज़ ज़रूर खाएं जो मीठी भी हो और गर्म तरावट रोग़न वाली हो चाहे थोड़ी ही क्यों न हो मगर खा ज़रूर लिया करें जैसे गाजर का हलुवा, अन्डों का हलुवा, शहद मिला हुआ दूध या बादाम का हलुवा अगर कुछ भी न हो तो शहद ही चाट लें या थोड़ा सा गुड़ ही सही खा ज़रूर लिया करें।

ज़रूरी नोट (हिदायत)

यह बात हमेशा याद रखें कि सम्भोग के बाद कोई ठंडी चीज़ न खायें ठंडा पानी न पीयें न फ़ौरन ठंडे पानी से नहायें। इससे बड़ा नुक़सान होता है अगर प्यास ज़्यादा ही लगे तो भी ठंडा पानी फ़ौरन न पीयें कुछ समय बाद ठहर कर पानी पीयें।

सम्भोग के बाद की कमज़ोरी

अगर सम्भोग के बाद कमज़ोरी मालूम हो तो कोई ऐसी दवा या हलुवा या माजून वग़ैरह इस्तिमाल करें जो दिल व दिमाग़ को ताक़त देता हो और शरीर में चुस्ती पैदा करता हो उसके लिए यह नुस्ख़ा फ़ायदे मंद है। मरमुकी एक तोला, मस्तगी एक तोला, खोलन्जान एक तोला, बेहमन सफ़ेद एक तोला,

लोंग सवा तोला, दाल चीनी, सवा तोला लोबान, सवा तोला गोंद, बबूल सवा तोला, रब्बुस सूस सवा तोला, आब्रेशम डेढ़ तोला, मोमयायी खालिस दो तोला, रोग़न बादाम सवा तोला, मीआ साइला दो तोला। तरकीब यह है कि मोमयायी और मीआ को अर्क़-ए-गाजर में मिला लें और बाक़ी दवाओं को कुट छान कर रोग़न-ए-बादाम में चुपड़ लें और मिला कर गूंध लें फिर चने के साइज़ की गोलियां बना लें दो से तीन गोलियों तक दूध से खा लिया करें। "हकीम के मश्वरे के बिना न बनायें"

आठ चीज़ों की ख़्वाहिश पूरी नहीं होती

(1) आँखें हुस्नो जमाल को देखने से (2) ज़मीन बारिश से (3) आलिम इल्म से (4) फ़क़ीर भीख माँगने से (5) हरीस माल को जमा करने से (6) समन्दर पानी से (7) आग लकड़ियों से (8) औरत मर्द से सैर नहीं होती। यानी औरत का दिल भी मर्द से नहीं भरता।

मर्द औरत की ग़िज़ा का पोशीदा राज़

जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया औरत की ख़्वाहिश मर्द से निन्यानवे (99) हिस्से ज़्यादा होती है यानी ख़्वाहिश के सौ हिस्से हैं जिनमें से निन्यानवे औरत के पास हैं। सिर्फ़ एक हिस्सा मर्द के पास है,अब ग़ौर करने वाले ग़ौर करें कि मर्द सिर्फ़ एक हिस्सा अपनी ख़्वाहिश पूरी करने का किस क़द्र दीवाना होता है। कि कभी-कभी दूसरों की बहू बेटियों की इज़्ज़त से खेल जाता है तो अब अन्दाज़ा लगायें कि जिसके अन्दर निन्यानवे हिस्से अधिक कामं वासना की ख़्वाहिश होती है उसका क्या हाल होता होगा जबकि आज इस ज़माने में शर्मो हया के तमाम पर्दे औरत ने उतार फेंके और वह हया को जानती भी नहीं मानती भी नहीं और ज़्यादा कुछ हमें लिखने की ज़रूरत भी नहीं क्योंकि ये सब नक़्शे सामने मौजूद हैं। उसूल यह है कि मर्दों को मिठाई और औरतों के लिए खटाई मुफ़ीद होती है क्योंकि मिठाई जोश व ख़्वाहिश को बढ़ाती है तो यह मर्दों के लिए अच्छी है और खटाई जोश व ख़्वाहिश को घटाती है तो यह औरतों के लिए अच्छी है।

ज़िना (बलात्कार) से मुताल्लिक़ मुख़्तसर कलाम

मेरी यह गुफ़्तगू ग़ौर से पढ़ें! अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि ऐ लोगो! ज़िना के नज़्दीक (क़रीब) भी मत जाओ। हुज़ूर स०अ०व० ने फ़रमाया कि ज़िना के समय आदमी से ईमान अलग हो जाता है। ज़िना इन्तिहाई संगीन तरीन व ग़लीज़-तरीन बुरा फ़ैल है यानी बलात्कार बहुत बड़ा संगीन ज़ुल्म है।

लिहाज़ा इस हरामकारी से बचने के लिए अपनी बीवी के अलावा दूसरी औरतों के मिलाप से बचना चाहिए। ज़िना करने के बुरे असरात जैसे मर्दों को लगते हैं इसी तरह औरतों को भी लगते हैं बल्कि इन बलात्कार करने वाले मर्द और औरतों की औलाद को भी इसके बुरे असरात से निजात नहीं मिलती। कभी-कभी बहुत दूर यानी खानदान तक बलात्कार की लानत पहुँचती है।

बाज़ारी औरतों से मिलने के नुक़्सानात

दस (10) आदमियों के पैशाब करने की जगह और रंडी में कोई फ़र्क़ नहीं होता। हर क़िस्म की बीमारी वाला इन्सान बाज़ारी फ़ाहिशा औरत से अपना मुँह काला करता है और मिलता है। वह ज़िना करने की एक ही जगह है। औरत भी एक ही है बिलकुल इसी तरह पैशाब करने की जगह भी एक होती है और पैशाब करने वाली उसी जगह पर बीसों होते हैं। रंडियों के पास हज़ारों आदमी आते हैं यह एक आदमी के लिए नहीं बेठतीं, रंडी का एक आदमी शौहर नहीं होता उस बाज़ारी औरत के पास रोज़ाना पचास नहीं तुम सिर्फ़ पाँच आदमियों का ही हिसाब लगा लो या चलो तुम सिर्फ़ रोज़ाना का एक ही आदमी ले लो अगर इस बाज़ारी रंडी औरत के पास रोज़ाना एक आदमी भी गया तो एक महीने में तीस हो गये साल में तीन सौ साठ (360) दिन के तीन सौ साठ व्यक्ति हुए। पाँच साल में अठ्ठारह सौ (1800) हो जाते हैं और प्रतिदिन पाँच व्यक्तियों के हिसाब से साल भर में नौ हज़ार (9000) व्यक्ति हो गये खूब ग़ौर कर लो कि अगर इसी तरह एक पैशाब करने के मुक़ाम पर पाँच आदमी पेशाब करते हैं तो उसको कारपोरेशन का आदमी आकर पाउडर से धोता है कीड़े मारने के लिए।

इस बाज़ारी औरत के पोशीदा मुक़ाम को कौन धोता है? अब जब लोग रंडी के पास जाते हैं तो रूपये देते हैं और यह भी नहीं पूछते कि तुझे कोन सी बीमारी है? उस की योनि के अन्दर क्या बीमारी ह? जबकि सब प्रकार के लोग उस के अन्दर धात गिराते हैं तो उस मुक़ाम में कीड़े (कीटाणु) और घातक बीमारियां पैदा हो जाती हैं अब उस के पास जाने वाला गया और ज़िना किया सुबह को पैशाब में जलन, पैशाब लाल या पीला आता है सफ़ेद पानी पैशाब के आगे-पीछे निकलता है पैशाब में पीप आती है ये सब बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं और जब यह ज़िना कार व्यक्ति अपनी बीवी से मिलता है तो उसको भी यह सब बीमारियाँ लग जाती हैं और एड्स की बीमारी का ख़तरा रहता है। फिर मर्दाना ताक़त की कमज़ोरी बढ़ती है और ये सब बीमारियाँ जन्म लेना शुरू कर देती हैं।

यह ज़िना (बलात्कार) फ़ना है

ज़िना कार व्यक्ति फ़ाहिशा औरतों से मिलकर बहुत सी बीमारियों में फंस जाता है। उनके मिज़ाज में बेहयायी पैदा होती है अपनी हलाल बीवी से मिलने में लुत्फ़ नहीं समझता। हराम फ़ाहिशा औरत से मिलने के लिए और अपनी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए ललचाता है और क़िस्म-क़िस्म की बीमारियों में घिर जाता है जैसे आतशक, सोज़ाक, एड्स जिनका इलाज बहुत मुशकिल हो जाता है क्योंकि इन के इलाज में वैज्ञानिक पूर्ण कामयाब नहीं हो पाये इसकी रिसर्च चल रही है कि इन ख़तरनाक बीमारियों से पूर्ण रूप से फ़ायदा किस दवा से हो सकता है। ज़िना करने वालों के चेहरे पर नहूसत व फटकार छा जाती है और उनके चेहरों पर से चमक दमक समाप्त हो जाती है। आख़िरकार अपनी उम्र भर की प्यारी कमाई हुई दौलत हकीमों, डाक्टरों के पास चली जाती है जैसे कि अपनी ज़िन्दगी भी किराये की ज़िन्दगी लगने लगती है। घरों का किराया दुकानों का किराया महीने में एक बार जाता है। लेकिन सेहत का किराया प्रतिदिन दवाओं के ज़रिये हर दिन देना पड़ता है और बहुत रुपया बरबाद करना पड़ता है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि ज़िना फ़ना है ज़िना माल का भी, जान का भी, इज़्ज़त का भी, ईमान का भी हर तरह की बरबादी है खूब याद रखो "ज़िना फ़ना है।"

मर्दाना ताक़त की कमी का बयान

यह एक आम बीमारी है कुछ ऐसे भी लोग हैं कि जो अपने हाथों से यह बीमारी पैदा कर लेते हैं और यह मर्दाना ताक़त की बीमारी शरीर के अनेक अंगों की कमी से पैदा होती है। कभी-कभी उम्र के ज़्यादा होने से भी हो जाती है। यह अक्सर अंगों में ख़ास तौर पर दिल, दिमाग़, जिगर, मेदा, गुर्दे हैं जो कि शरीर के अन्दर इस सिलसिले में बादशाह हैं। यहाँ से यह बात भी मालूम हो जानी चाहिये कि लिंग की ताक़त व उसकी तवानाई का दारोमदार किसी एक हिस्से से ताल्लुक़ नहीं रखता बल्कि दिल, दिमाग़, जिगर, गुर्दे सब मिलकर उसमें मदद करते हैं अगर इन पाँचों अंगों में से कोई अंग कमज़ोर या बीमार हो जाए तो यह सच है कि क़ुव्वत-ए-मर्दानगी पर ज़रूर असर पड़ेगा या यूँ समझा जाए कि मर्दानगी के ख़ासतौर पर पाँच पाए (सुतून) हैं। चारों कोनों में एक-एक सुतून बीच में मेदे का सुतून है अगर कोई शामियाना डाला जाए और चारों तरफ़ सुतून लगाकर रोका जाए और बीच में सुतून न रहे तो तब भी शामियाने का पर्दा सही तौर पर क़ायम नहीं रह सकता।

हर इन्सान के लिए खुसूसी मश्वरा

हर हकीम व तबीब और मरीज़ इस उसूल को अपने पेशे नज़र रखते हुए इलाज करे और कराये कि वे कोन से अस्बाब हैं जिनकी वजह से मर्दाना ताक़त में कमी हो रही है। इसके असली कारण व वजह पर गोर करें फिर इलाज करें और करायें तब तो तबीब व मरीज़ दोनों कामयाब हो सकते हैं वरना मरीज़ अपनी क़ीमती दौलत लुटाता रहेगा और हकीम बदल-बदल कर नुस्खे देता रहेगा और फ़ायदा हासिल न होगा मरीज़ की दौलत लुट जायेगी और हकीम साहब की इज़्ज़त और मेहनत जाती रहेगी।

जागो और जगाओ,समझो और समझाओ

बहुत से व्यक्ति मिटी हुई कुव्वते मर्दानगी को वापस लाने के लिए झूठे इश्तिहारी, बाज़ारी डाक्टर, सड़कों पर आवाज़ें लगाकर दवा बेचने वालों के पास जाकर उनसे दवायें लेते हैं जोकि बिल्कुल बे उसूली हैं कि वे लोग मरीज़ के असूबाब को क्या जानें। वे उसकी तदबीर से बिलकुल नावाक़िफ़ होते हैं। मिसाल के तौर पर किसी व्यक्ति के पास क़ुव्वते मर्दानगी का अक्सीरी नुस्ख़ा है। लेकिन यह कभी नहीं हो सकता कि वह हर हाल और हर सूरत में कामयाब हो जाये क्योंकि उस बीमारी के अन्य कारण हो सकते हैं और हर कारण का इलाज अलग-अलग होता है। और खूब समझो कि इस मर्दाना ताक़त के सिलसिले में लोग जल्दी करते हैं। यह कैसे हो सकता है? कि जिस मकान को ढहाने और बर्बाद करने के लिए वह भी नौजवानी में कई साल लगा दिये हों तो क्या उसकी तामीर के लिए मुद्दत की ज़रूरत नहीं होगी? मगर जल्दबाज़ी का बुरा हो यहाँ पर लोग सब्र नहीं करते।

मर्दाना शक्ति की कमी के कारण व पहचानें

मर्दाना ताक़त की कमी के अन्य कारण हैं जिनको हर हकीम और मरीज़ को जानना अनिवार्य है।

(1) मेदे की कमज़ोरी के कारण भी अधिक शक्ति की कमी पैदा होती है कि भोजन भली-भाँति हज़म नहीं होता तो जब भोजन भलि-भाँति हज़म नहीं होता तो उस भोजन से रक्त नहीं बनता। जब रक्त नहीं बनता तो फिर तो वीर्य भी नहीं बनता क्योंकि वह खून से ही बनता है।

(2) जिगर की कमज़ोरी से भी अधिक कमज़ोरी होती है कि जिगर ही मनुष्य के बदन में रक्त बनाने वाला बादशाह अंग है। ख़ास जिगर का कार्य ही रक्त बनाना है। रक्त की कमी हो, मुँह का ज़ायक़ा बिगड़ा हुआ हो, शरीर की रंगत

सुर्ख न हो बल्कि ज़र्दी माइल हो, खास सम्भोग के समय जोश म कमी आ जाये तो जान लेना चाहिये की जिगर की कमज़ोरी के कारण क़ुव्वते मर्दानगी में कमी आई है।

(3) दिल (ह्रदय) की कमज़ोरी से भी क़ुव्वते बाह कमज़ोर होती है जिस मनुष्य का सम्भोग करने का निश्चय करने से दिल की धड़कन बढ़ जाये। ख़ास सम्भोग के समय और बाद में दिल हाँपता हो या दिल डूबा-डूबा सा मालूम हो तो जान लेना चाहिये कि दिल की कमज़ोरी की वजह से मर्दानगी में कमी आई है।

(4) दिमाग़ की कमज़ोरी से भी मर्दानगी में कमी आ जाती है। इसमें लिंग के पट्ठे यानी माँसपेशियाँ कमज़ोर हो जाती हैं और मरीज़ के सर में अक्सर दर्द रहता है या सम्भोग के फ़ौरन बाद चक्कर आना और आखों के तले अंधेरा आ जाना और सम्भोग के फ़ौरन बाद बेहोशी की सी नींद आ जाती है तो जान लेना चाहिये कि दिमाग़ की कमज़ोरी की वजह से मर्दानगी में कमी आई है।

(5) गुर्दों की कमी और कमज़ोरी की वजह से भी मर्दानगी में कमी आ जाती है और गुर्दों की जगह पर कमर में दर्द रहता है। झुकने या करवट बदलने से दर्द होता है पैशाब की बारबार ज़रूरत पड़ती है और लिंग पूरी तरह से हरकत में नहीं आता और पिन्डलियों में दर्द रहता है तो समझ लेना चाहिये कि गुर्दों की कमज़ोरी की वजह से मर्दानगी में कमी आई है।

क़ुव्वते मर्दानगी में कमज़ोरी की एक ख़ास वजह

अगर मरीज़ कमज़ोर हो कोई काम करने से जल्दी थक जाता हो। पिंडलियों में हर समय दर्द रहता हो, परेशान ख्याल रहता हो, कमर, सीने और सर में हर समय दर्द रहता हो, हाज़्मा भी बिगड़ा रहता हो, रीढ़ की हड्डियों पर चींटियाँ सी रेंगती मालूम होती हों, आँखों में झीरी (हल्क़े) पड़ गए हों। तो ये सब अलामात जिरयान की हैं। धात पेशाब के साथ-साथ आता है। ख़ासतौर से यह हमारा मशवरा है कि मर्दाना ताक़त की कमी के और भी सबब हैं मगर ख़ास-ख़ास कारणों को हमने बयान कर दिया है और कुछ नीचे बयान करते हैं सब को बयान करने से किताब ज़्यादा बड़ी बन जायेगी लिहाज़ा हर हकीम व तबीब इन तमाम अस्बाब पर ग़ोर करें क्योंकि किसी एक ही सबब से यह कमज़ोरी नहीं होती। सबब भी अलग-अलग और दवा भी अलग-अलग हैं। इस मर्दानगी की कमज़ोरी के मरीज़ों से गुज़ारिश है कि वह किसी अच्छे स्पेशलिस्ट डाक्टर से या तज़्रिबे कार हकीम से अपनी असली बीमारी बता कर बहुत सब्र के साथ इत्मीनान से इलाज करायें तो कामयाबी ज़रूर हासिल होगी और मेरी

इस किताब के पढ़ने वालों से पुरखुलूस विन्ती है कि जिन में यह बीमारी हो तो किसी ग़ैर ज़िम्मे दार डाक्टर (झोला छाप डाक्टर) या नीम हकीम या इश्तिहार बाज़ बाज़ारू मजमे वालों के धोखे में न आयें।

कौन से नामर्दों का इलाज हो सकता है

खूब याद रखें कि अगर कोई पैदायशी तौर पर (जन्म से) नामर्द है और उस नामर्द में मर्दाना सिफ़ात से ज़्यादा औरत वाली सिफ़ात अधिक हैं तो इस हालत में उस नामर्द का इलाज असम्भव है और अगर नामर्दी वाली सिफ़ात जन्म से नहीं हैं बल्कि बाद में बनें तो इलाज हो सकता है। मोटे आदमियों की मर्दाना ताक़त का इलाज मुशकिल से होता है। दुबले आदमी की मर्दाना ताक़त का इलाज आसानी से हो जाता है। अक्सर मोटे आदमी की मर्दाना ताक़त कमज़ोर होती है। अगर हो भी तो उम्र बढ़ जाने पर मर्दाना ताक़त बहुत जल्दी समाप्त हो जाती है। और जो लोग बूढ़े हो चुके हैं और उनकी मर्दाना ताक़त समाप्त हो चुकी है तो उन बूढ़ों को मर्दाना ताक़त का इलाज कराना बेकार है पहले ऐसे मरीज़ अपनी सेहत व तंदरुस्ती को अच्छा रखें। शरीर को हृष्ट-पुष्ट करने वाली और मेदे को ताक़त देने वाली दवाऐं व ग़िज़ाऐं इस्तमाल करें। यानी पौष्टिक भोजन खायें जब शरीर में ताक़त आयेगी तो मर्दानगी स्वंय ही बढ़ जायेगी फिर भी जहाँ तक हो सके ऐसे लम्बी उम्र वालों को सम्भोग कम करना चाहिये और ऐसे मरीज़ स्वस्थ वर्धक दवायें प्रयोग करें इन से मेदा स्वस्थ बना रहेगा। भूख बढ़ेगी पेट का हाज़्मा बेहतर होगा और बदन के दर्द को आराम होगा गैस (रियाह) को निकालेगा, मनी (वीर्य) गाढ़ी होगी, जोश पैदा होगा, और सम्भोग की इच्छा भी वापस लौट आयेगी।

यह एक राज़ की बात है

यह बात हर मर्दाना ताक़त वाले मरीज़ के लिए आवश्यक है कि पहले मरीज़ आम शारिरिक कमज़ोरियों को दूर करे और अगर कोई अंग ख़ास कर दिल, दिमाग़, जिगर, मेदा, गुर्दों में से कमज़ोर हो तो उसका इलाज पूर्ण रूप से करायें यह उसूल की बात है।

यह बात हमेशा याद रहे

मर्दाना ताक़त के सिलसिले में ग़िज़ाओं का फ़ायदा दवाओं से अधिक होता है। ताक़त देनी वाली ग़िज़ायें ही असली मर्दानगी को पैदा करती हैं। बे शुमार तज्रिबों के बाद यह बात हासिल हुई है कि मर्दानगी की अधिक से अधिक

रेटेन्ट दवायें यही हैं जिनमें विटामिन, प्रोटीन मौजूद हो और ये चीज़ें घी, गोश्त, अंडा, दूध, सूखे मेवे फल आदि में मिलती हैं और ताक़त देने वाली गिज़ाओं क ज़्यादा से ज़्यादा हज़्म करने की ताक़त पैदा करें जितनी अधिक हाज़मा पैदा करने वाली खूराकें हज़्म होंगी इतनी ही व्यक्ति में मर्दानगी ताक़त बढ़ेगी। इसी के साथ यह भी ज़रूरी है कि यह ग़िज़ाये ऐसी हों कि जल्द पचने वाली हों और स्वादिष्ठ भी हों, खुशबूदार भी हों जिनको खाने के लिए इच्छा भी करती हो यह चीज़ें जल्दी हज़्म होकर शरीर में ताक़त पैदा करती हैं। खाने के साथ-साथ शरीर पर खुशबूदार तेल भी प्रयोग करें और खुशबू सूंघे मन को शान्त व खुश रखें। नियामित रूप से व्यायाम करें और ताज़ा पानी से सुबह स्नान करें या गुनगुने पानी से स्नान करें, रंजो ग़म से अपने आप को बचाये रखें, अत्याधिक फ़िक्र न करें, अधिक ठन्डी चीज़ों से भी बचें और खट्टी चीज़ें बिल्कुल न खायें न पीयें। नशे वाली चीज़ शराब, अफ़ीम वग़ैरह का प्रयोग बिल्कुल न करें ताज़ा व साफ़ हवा से दिल को खुश रखें, सुबह व शाम को बाग़-बग़ीचों में टहलें, सैर व तफ़रीह करें। ये सब बातें सेहत के लिए अति आवश्यक हैं।

यह एक ख़ास हिदायत है

मेदे का ख़ास ख्याल रखना हर इन्सान के लिए ज़रूरी है। ख़ास तौर पर मर्दाना ताक़त के मरीज़ को इस बात पर अधिक ध्यान देना चाहिये। इसलिए कि जिसका मेदा अच्छा होगा उसकी सेहत अच्छी होगी। मेदा अगर अच्छा है तो सूखी रोटी चटनी खाने से भी सेहत को कोई नुक़्सान नहीं होता और अगर मेदा ख़राब है तो देसी घी, मुर्ग़ा जैसे क़ीमती और उ़मदा से उ़मदा खाने से भी सेहत नहीं बना पायेंगे। और तंदरूस्ती बिगड़ती ही रहेगी। हुज़ूर स०अ०व० ने इरशाद फ़रमाया कि मेदा पूरे बदन का हौज़ है। मेदा बीमारियों का घर है क्योंकि अगर मेदा ख़राब है तो सारी बीमारियां शरीर के अन्य अवयवों में पहुँचेगी और अगर मेदा स्वस्थ है तो तमाम शरीर में खून स्वस्थ पहुँचेगा मेदे से पूरे शरीर का नाता जुड़ा हुआ है मेदे से पूरे शरीर की रगें फैल रही हैं इसलिए मेदे की ओर ख़ास ध्यान दिया जाना चाहिये। खूब भूख लगने पर खाना खायें और जब थोड़ी भूख बाक़ी रहे तो खाना छोड़ दें ताकि खाना हज़्म होने में मेदे पर अधिक दबाव न पड़े और खून तैयार होकर पूरे शरीर में फैले।

एक फ़ायदे मंद नसीहत आमेज़ हिकायत

एक ग़रीब व्यक्ति की किसी धनी व्यक्ति से दोस्ती थी। ग़रीब व्यक्ति बहुत अच्छा स्वस्थ मोटा ताज़ा था। और धनी व्यक्ति दुबला-पतला बीमार सा था एक दिन उस अमीर व्यक्ति ने अपने ग़रीब दोस्त से कहा कि दोस्त तुम ग़रीब हो

कमाई भी बहुत थोड़ी है लेकिन देखने में तुम मुझ से अच्छे मोटे-ताज़े हो ऐसी कौन सी गिज़ा खाते हो? गरीब दोस्त ने बताया कि मैं तुम से अधिक स्वादिष्ट खाना खाता हूँ। दूसरे हर महीने में निकाह करता हूँ। अमीर दोस्त ने उसका मजाक उड़ाया। गरीब दोस्त ने कहा मज़ाक की क्या बात है कल को तुम्हारी मेरे मकान पर दावत है। अमीर व्यक्ति ने ग़रीब दोस्त की दावत क़ुबूल कर ली। दूसरे दिन अमीर व्यक्ति खाने के समय ग़रीब दोस्त के मकान पर पहुँचा तो ग़रीब दोस्त ने बजाये खाना खिलाने के बातें शुरु कर दीं। बातों-बातों में बहुत देर हो गई उस अमीर ने खाने का तक़ाज़ा किया तो ग़रीब दोस्त ने कहा कि अभी खाना तैयार नहीं हुआ। पक रहा है। फिर बातें शुरू कर दीं यहाँ तक कि अमीर व्यक्ति का भूख से बुरा हाल हो गया और बार-बार खाने का तक़ाज़ा किया जब ग़रीब दोस्त ने उस का भूख की वजह से बुरा हाल देखा तो कहा कि ताज़ा खाना तो अभी तैयार नहीं हुआ। बासी रोटी और साग है कहो तो लाँऊ? अमीर व्यक्ति ने कहा जो कुछ है ले आओ बातें न करो। अख़िरकार वह ग़रीब दोस्त बासी रोटी और साग ले आया और उस अमीर व्यक्ति ने उसे अन्धे बावलों की तरह खाना शुरु किया और हर लुक़्मे पर सुबहान-अल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह कहता जाता जब वह अमीर व्यक्ति पेट भर चुका तो फिर बाद को ताज़ा अच्छा खाना सामने लाय। चूँकि अमीर व्यक्ति का पेट खूब भर चुका था। अब उन्होंने उस ताज़ा खाने को खाने से मना कर दिया ग़रीब दोस्त ने कहा खाइये यह बहुत स्वादिष्ट है। अमीर शख़्स बोला नहीं जी बस इस से अधिक स्वादिष्ट नहीं है। ग़रीब दोस्त ने कहा जनाब वह लज़ीज़ खाना यही है। भूख में बासी खाना जो हम खाते हैं वह तुम्हारे मुर्ग़ पुलाव से अधिक स्वादिष्ट लगता है। क्योंकि तुम तो हर समय कुछ न कुछ खाते रहते हो भूख से नहीं खाते हो टाइम से खाते हो और मैं भूख से खाता हूँ टाइम से नहीं खाता। फिर अमीर दोस्त ने कहा कि लज़ीज़ का मतलब तो मैं समझ गया अब यह बताओ हर महीने निकाह तुम कैसे करते हो? ग़रीब दोस्त ने जवाब दिया कि मैं महीने में एक बार बीवी के पास जाता हूँ। जब तबीयत में पूरी रग़बत होती है और सम्भोग का जोश बढ़ जाता है तब स्त्री से सहवास करता हूँ और तुम लोगों की तरह रोज़ाना या दूसरे दिन या तीसरे दिन नहीं जाता। बस मुझे हर महीने में वैसा ही एहसास होता है जैसा कि नये निकाह में आता है और तुम को तो सोच फ़िक्र से सोहबत को (काम वासना को) उभारना पड़ता है। इससे तुम्हें ऐसा लुत्फ़ नहीं आता जैसे नये निकाह में आता है। बस यह अमीर व्यक्ति अपने दोस्त की दोनों

बातें मान गया कि वाक़ई तुम्हारी दोनो बातें सच्ची हैं। मेरे अर्ज़ करने का मक़्सद यह है कि भूख के साथ जो ग़िज़ा खाई जायेगी, उससे क़ुव्वत आयेगी और खून भी बनेगा और जो बेभूख के खाया जायेगा वह ज़हर बनेगा यानी नुक़सान देने वाला साबित होगा।

मर्दाना ताक़त की कमज़ोरी के असबाब

कुव्वते मर्दानगी की कमज़ोरी दो तरह की होती है। (1)सम्भोग के जोश में अगर कमी महसूस हो तो उसकी वजह व्यक्ति की खुराक में कमी यानी विटामिनों की कमी या बीमारी की वजह से बदन (शरीर) कमज़ोर हो जाता है और इसी वजह से रीह (हवा) व खून जो कि सम्भोग की क्रिया में सबसे अधिक क्रियाशील होता है उसकी कमी हो जाती है। और ताक़त में कमी आ जाती है और चेहरा पीला पड़ जाता है। इलाज उसका यह है कि जल्द हज़्म होने वाली ग़िज़ायें जो कि शरीर को ताक़त भी पहुँचाये, खूब खायें और ज़्यादा सोयें (आराम करें)।

सम्भोग करना छोड़ दें और सुबह की सैरो तफ़रीह करें दिलो-दिमाग़ को आराम (राहत) पहुँचाने वाले खेल और खुश्बुओं का प्रयोग करें (2) दूसरे यह कि वीर्य की कमी होने की वजह से ऐसी ग़िज़ायें खायें जो कि वीर्य वर्धक हों। जिसके लिए (कुव्वते फ़ौलादी नुस्खा है) यह भी मुफ़ीद है मग़ज़ बादाम शीरीं, चारों मग़ज़, पिस्ता, मग़ज़ क़न्दक़ मग़ज़ नारजैल, शक़ाकुल मिसरी, बेहमन सालब मिसरी, इन तमाम दवाओं को बराबर वज़न ले कर बारीक कुट छान कर और तीन हिस्से ज़्यादा असली शहद में मिलाकर हर रोज़ (प्रतिदिन) सुबह नहार मुँह प्रयोग करें "हकीम साहब के मश्वरे के बिना तैयार न करें"।

मज़ीद ग़ौर करें (ध्यान दें)

कभी-कभी सम्भोग की मुद्दत बहुत लम्बी होने की वजह से मर्दाना ताक़त में कमी आ जाती है। इलाज उसका यह है कि कोई ऐसी किताब जिसमें संभोग की क्रियाओं का पूरा खुलासा हो पढ़ा करें या आशिक़-माशूक़ की सिफ़तों का बयान हो उसको पढ़ें और जानवरों के मिलने को देखा करें मेरी किताब "तन्हाई के सबब" को पढ़ना भी फ़ायदेमन्द होगा।

ध्यान दें

कभी-कभी बीमारी लम्बी होने की वजह से या रंजोग़म अत्याधिक होने की वजह से भी दिल कमज़ोर हो जाता है। और दिल की कमज़ोरी की वजह से

मर्दानगी में भी कमज़ोरी आ जाती है। तो उसका इलाज यह है कि दिल को राहत व ताक़त देने वाली ग़िज़ायें व दवायें जैसे (ख़मीरा अब्रेशम हकीम अरशद वाला) प्रयोग करें और अच्छी सुरीली दिल पज़ीर व दिल पसन्द आवज़ों में माशूक़ों के मुनज़्ज़म वाक़िआत सुना करें। इससे भी दिल को राहत मिलती है। ख़ौफ़ (डर) की वजह से भी कमी आती है। इस लिए दिल से ख़ौफ़ व डर को दूर निकालें।

मज़ीद ध्यान दें

एक सबब यब भी है कि व्यक्ति का लिंग टेढा हो जाये या उसकी नसों (रगों) में कमज़ोरी आ जाये तो उसका इलाज यह है कि तिलाओं व तेलों का जो कि रगो (नसों) को ताक़त दें उसका सही प्रयोग हो ताकि असली ताक़त वापस आ जाये।

होशियार रहें

जो व्यक्ति जन्म से मर्दाना ताक़त की कमज़ोरी में फंसा हो तो उसको अरबी ज़बान में इन्नीन (नामर्द) कहते हैं और इन्नीन का इलाज नहीं हो सकता। रूपये माल बरबाद न करें होशियार रहें।

वे ग़िज़ायें जो ताक़त-ए-मर्दानगी को बढ़ाती हैं

मख़्तसर तरीक़े पर हम चन्द ग़िज़ाओं के नाम लिखते हैं जिनसे ताक़त-ए-मर्दानगी बढ़ती है।

(1) ऊँटनी का दूध जितना आसानी से हज़्म हो सके लगातार एक महीना पियें बहुत लाभदायक है।

(2) तुख़्मे अटंगन चार माशा, अँगूर के रस में मिलाकर खाने से मर्दानगी बढ़ती है।

(3) गाजर का मुरब्बा जो शहद में मिलाकर तैयार किया गया हो वह भी लाभदायक है।

(4) अन्डों की ज़र्दी घी में भूनकर उसमें पिसी हुई सोंठ एक माशा मिलाकर, पका कर सेवन करें

(5) गाजरों की ज़्वारिश यह ज़्वारिश दिल जिगर को ताक़त देती है और फ़ायदे मंद है मीठी गाजर लेकर उनके दर्मियान की पीली जड़ निकाल कर ऊपर का बारीक हिस्सा भी साफ़ करें। फिर उनको दूध में पकायें जब गाजर गल जायें तो उनको लोहे की छलनी में छान लें और एक किलो शहद मिलाकर आग पर पकायें जब बिलकुल पकने के क़रीब हो तो सोंठ, मस्तगी, दाल चीनी, जोज़्बा, दारे फ़िल फ़िल, ज़ाफ़रान, सुम्बुलुत्तीब, ख़ोलन्जान एक एक तोला, शक़ाक़ुल

मिसरी दो तोला, कूट कर मिला लें और पकायें और आग से उतार कर अच्छी तरह मिलायें रोज़ाना दो तोला खायें।

(6) मुर्ग़ का गोश्त अक़्ल (दिमाग़) और वीर्य को बढ़ाता है।

(7) मुर्ग़ी का गोश्त उस समय अधिक फ़ायदा पहुँचाता है जब कि वह अभी अंडा न देती हो। दूध में रोग़ने बादाम डालकर पीना।

ख़ुसूसी पोशीदा राज़ की ग़िज़ा

मर्दाना क़ुव्वत की तलाश करने वाले हमेशा इस बात को याद रखें कि मुर्ग़ का गोश्त इस सिलसिले में बहुत फ़ायदे मंद है मगर ज़्यादा बेहतर है कि मुर्ग़ा देसी होने के साथ-साथ काले या लाल रंग का हो। अगर न मिले तो इस मक़सद के लिये दूसरे रंग का न खायें। क्योंकि काले और लाल रंग का मुर्ग़ जोश पैदा करता है और उससे ख़्वाहिश बढ़ती है।

मर्दाना ताक़त के लिए मुर्ग़ पकाने का तरीक़ा

इस मक़सद को लिए मुर्ग़ पकाने का तरीक़ा यह है कि एक किलो मुर्ग़ का गोश्त हो और उसमें दस अदद प्याज़ कम से कम 300 ग्राम हो डाल कर पकायें और उसमें एक मुट्ठी भर छिले हुए तिल डाल दिये जायें फिर उसको ज़रूरी मसालों के साथ डालकर भूना जाये तो इससे मर्दानगी में अधिक जोश पैदा होता है।

मुर्ग़ी का अन्डा भी अधिक लाभकारी है

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि यह क़ुव्वते मर्दानगी को बढ़ाता है मगर मुर्ग़ी के अन्डे का प्रयोग प्रतिदिन किया जाये तो चेहरे पर दाग़ पैदा हो जाते हैं। अन्डा देर से हज़्म होता है। इसलिए इसके नुक़्सान से बचने के लिए केवल ज़र्दी प्रयोग करें सबसे अच्छा अन्डा मुर्ग़ी और तीतर का होता है। जब कि वह ताज़ा हो।

क़ुव्वते मर्दानगी के लिए अन्डा प्रयोग करने का तरीक़ा

इस का तरीक़ा यह है कि अन्डे को उबाला न जाये वरना तो वह बदहज़मी पैदा करता है। अंडा बहुत लाभकारी वस्तु है अगर वह हज़्म हो जाये और तबीअ़त के मुवाफ़िक़ आ जाये अन्डे के प्रयोग का सबसे ज़्यादा सही तरीक़ा यह है कि बहुत तेज़ गर्म पानी में अन्डा डाल दें और बहुत धीमी आँच पर इतनी देर उबाला जाये जितनी देर में सौ (100) बार अल्लाह-अल्लाह कहा जाये।

यह हदीसे पाक है:-

एक साहब ने हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया कि मेरे औलाद नहीं होती हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अंडों का इस्तिमाल करो।

मर्दाना ताक़त बढ़ाने के लिए अच्छा है

मर्दाना ताक़त को बढ़ाने में छुवारों को ख़ास अहमियत हासिल है और शरीयते इस्लाम ने इसकी अच्छी तरह यादगार क़ायम की है वह इस तरह है कि जब भी किसी मुसलमान की शादी होती है तो निकाह के बाद छुवारें बाँटना सुन्नते रसूल स०अ०व० है।

यह बहुत ग़ौर करने की बात है

हर ग़रीब से ग़रीब मुसलमान और हर अमीर से अमीर करोड़पती मुसलमानों के यहां निकाह के बाद छुवारे बाँटे और लुटाये जाते हैं। उसको छोड़कर उसके बदले में दूसरी चीज़ का प्रयोग नहीं किया जाता चाहे कितनी क़ीमती चीज़ हो या घटिया हो। वजह उसकी यही है कि रसूल स०अ०व० की शरीयत में यह सबक़ सिखाया गया है कि ऐ होने वाले दुल्हा और होने वाले पति आज से तुम इन छुवारों को पाबान्दी से प्रयोग करते रहना, तुम्हें इसकी आवश्यकता पड़ेगी। इसी लिए मर्दाना ताक़त के लिए अक्सर छुवारे हर एक नुस्ख़े में ज़रूर डाले जाते हैं। छुवारों से वीर्य बनता है और गढ़ा भी होता है।

ख़्याली और नफ़्सयाती नामर्दी के लिए इलाज

कभी-कभी व्यक्ति को अपने वहम या ख़्यालात से ऐसा प्रतीत होता है कि मैं नामर्द (नापुंसक) हूँ। हालाँकि वह मर्दाना ताक़त वाला सही तंदरूस्त पुरूष होता है। जैसा कि हमने पीछे बयान किया है कि ऐसे लोगों को जानवरों और हैवानों के आपस के मिलाप जुफ़्ती देखने से फ़ायदा होता है। नफ़्सयाती नामर्दी समाप्त होती है।

नफ़्सयाती नामर्दी के लिए दवा

यह दवा ख़्याली व वहमी नफ़्स याती नामर्दों के लिए फ़ायदेमन्द है। भंग के पत्ते 3 माशा, बादाम 3 माशा, जायफ़ल दो माशा, सालब पन्चा दो माशा, जरवार दो माशा, दाल चीनी एक माशा जावित्री एक माशा सब को बारीक कूट पीस कर चने के दाने के बराबर गोलियाँ बना लें अ़र्क़-ए-गुलाब से खरल करके और दो-दो गोलियाँ सुबह शाम पच्चीस दिन तक प्रयोग करें। "बग़ैर हकीम के मश्वरे के कोई दवा इस्तिमाल न करें!"

शुगर की वजह से नामर्दी के लिए

कभी-कभी शुगर की बीमारी की वजह से भी नामर्दी हो जाती है। यानी मर्दाना ताक़त में बहुत कमी आ जाती है उसके इलाज के लिए दवाऐ हैरत ज़रूर इस्तेमाल करें बहुत पेटेन्ट और फ़ायदे मन्द है। यह दवा शुगर के मरीज़ों के लिए फ़ायदेमन्द है।

कोकबन्दी की वजह से नामर्दी

कभी-कभी दुश्मन शेहवत बन्द करा देते हैं जिसकी वजह से मर्द अपनी बीवी पर क़ाबू नहीं पाता और उसका हक़ अदा नहीं कर पाता या फिर औरत की कोकबन्दी की वजह से औलाद से महरूमी रहती है। इसके लिए बहुत से इलाज हैं। एक बहुत ही पेटेन्ट इलाज हमारी दूसरी किताब जिसका नाम 'पोशीदा ख़ज़ाने' है। इसमें तहरीर है इससे अपना मस्अला हल करें। या फिर मुझसे (लेखक से) मिलें। फ़ोन पर इजाज़त लिए बग़ैर हरगिज़ न आयें।

इश्क़ की बीमारी का इलाज

इश्क़ असल में फ़िक्र है अगर किसी को किसी औरत से इश्क़ हो जाये तो उसका सिर्फ़ एक ही इलाज है। बेह्तर तो यह है कि उसी औरत से शादी कर दी जाये अगर वह मुनासिब हो अगर मुनासिब न हो तो उससे अत्याधिक नफ़रत दिला दी जाये और समझा कर दूसरी अच्छे नाक-नक़्शे की हसीन व जमील औरत से उसकी प्यार मुहब्बत जताकर शादी करा दी जाये। बस इस हालत में ज़रूर उसके इश्क़ की आग ठंडी पड़ जायेगी।

तमाम मर्दाना कमज़ोरी के बीमारों के लिए ख़ास हिदायत

यह हिदायत तमाम इन्सानों के लिए ख़ास कर मर्दाना ताक़त की कमज़ोरी वाले लोगों के लिये अधिक ख़ास है। वे इन बातों पर अमल करने से आने वाली बीमारियों व मुश्किलों से हिफ़ाज़त में रहेंगे और लगी हुई बीमारियों से निजात व छुटकारा मिल जायेगा। सदैव सूरज निकलने से पहले उठना चाहिये। नहार मुँह थोड़ा बहुत ताज़ा या गर्म पानी जो उचित समझे अपनी आदत के तौर पर पिये। फिर लेटरीन यानी टट्टी पैशाब से छुटकारा पाये ख़ास कर क़ब्ज़ के मरीज़ तो अवश्य ही इस प्रयोग को अपनायें ताकि लेटरीन आसानी से आ जाये और बॉयें पैर पर ज़ोर देकर लेटरीन करने के लिए बेठे इस प्रक्रिया से लेटरीन से जल्दी फ़राग़त मिल सकती है। यह सुन्नत भी है। रात को जल्दी सोयें सुबह को जल्दी उठें, क्योंकि स्वपन दोष ज़्यादातर रात के आख़िरी हिस्से में ही होता है। सैरो तफ़रीह (घूमना) पाक व साफ़ स्वच्छ हवा सुबह को बहुत

फ़ायदेमंद होती है उसका आश्रद लें। स्वच्छ हवा से सुर्ख़ खून बनने में मदद मिलती है। इसी लिए सुबह का घूमना एक बेहतरीन टॉनिक का काम करता है। इससे दिलो-दिमाग़ ताज़ा हो जाता है। शरीर को ताक़त मिलती है। नमाज़ पढ़ कर प्रतिदिन तेज़ रफ़्तारी से लगभग 2 घंटे चलना स्वास्थय के लिए बेहतरीन पोशीदा राज़ है। आशिक़ाना नाविलों से बदतहज़ीब साथियों (कुसगंति) से,फ़िल्मों से अपने आप को पूरे तौर पर बचायें। अच्छे नेक साथियों बुज़ुर्गों व सज्जन पुरूषो की संगाति में रहें। नमाज़ रोज़ों का पूरा ध्यान रखें। और हर महीने में एक रोज़ा अवश्य रख लिया करें। पेट की ख़राबी तथा क़ब्ज़ से सावधान रहें अगर क़ब्ज़ हो जाये तो फ़ौरन उसका इलाज करें। क़ब्ज़ तमाम बीमारियों की जड़ व बुनियाद है। 99 फ़ीसदी बिमारियाँ क़ब्ज़ से ही बनती हैं। अगर क़ब्ज़ हो जाये तो एक या दो समय खाना न खायें और पानी खूब पीयें। ख़ास तौर पर सुबह के समय पेट भर कर पानी पियें। खाने में हरी सब्ज़ी ज़्यादा प्रयोग करें। मगर भिन्डी क़ब्ज़ करती है लिहाज़ा क़ब्ज़ के समय भिन्डी प्रयोग न करें। आमतौर पर स्वप्न दोष भी क़ब्ज़ की वजह से अधिक होता है। रात को खाना खा कर कम से कम 180 क़दम ज़रूर चल लिया करें और सोने से दो घन्टे पहले रात का खाना खा लेना चाहिए। बेहतर है कि इशा की नमाज़ से पहले खाना खा ले, नमाज़ पढ़कर सो जायें,रात को सोते समय दूध पीना अच्छा है। मगर तेज़ गर्म दूध कभी न पीयें। चाहे रात हो या दिन हो हल्का गर्म ही पियें। रात को सोते समय पानी भी पेट भर कर नहीं पीना चाहिए। इससे भी स्वप्नदोष का ख़तरा रहता है। दिन में खाना पेट भर कर खा सकते हैं। मगर रांत को पेट भर के नहीं खाना चाहिये कुछ भूख बाक़ी रहने दें। सोने से पहले पेशाब करना चाहिये लिंग को ठंडे पानी से धोयें। ठंडा पानी लिंग पर डालने से स्वप्न दोष का ख़तरा बड़ी हद तक टल जाता है। और अधिक मालूमात के लिए मेरी किताब "तन्हाई के सबक़" को पढें ।

स्त्री के गर्भ ठहरने की पहचान

मर्द और औरत के वीर्य मिलने से गर्भ ठहरता है और जब स्त्री को गर्भ ठहरता है तो उसे सुस्ती महसूस होती है और स्त्री को ऐसा लगता है कि बच्चे दानी का मुंह लिंग को चूस रहा है और बच्चे दानी का मुँह बहुत मज़बूती से बन्द हो जाता है। सम्भोग के बाद वीर्य बच्चे दानी से नहीं निकलता। स्त्री की टुन्डी यानी नाफ़ और योनि के बीच में हल्का-हल्का दर्द पैदा होता है। बच्चेदानी का मुँह इस क़द्र मज़बूत बन्द होता है कि उसमें बारीक सलाई भी नहीं जा सकती। बच्चेदानी ऊपर को खिंच जाती है। माहवारी का आना बन्द

हो जाता है और पेशाब करने में हल्का सा दर्द होता है। स्त्री को सम्भोग से नफ़रत होने लगती है और अगर सम्भोग किया जाये तो लज़्ज़त महसूस नहीं होती। बल्कि सम्भोग के समय स्त्री की नाफ़ के नीचे दर्द होता है। जी मचलाने लगता है अगर स्त्री के पेट में लड़का है तो सम्भोग से अधिक नफ़रत बढ़ जाती है। गर्भ ठहरने के बाद तबीअ़त में बेचैनी बढ़ जाती है। शरीर भारी और सुस्त पड़ने लगता है। उल्टी आने लगती हैं खट्टी डकारें आती हैं। दिल भी कभी-कभी धड़कने लगता है। एक या दो महीने के बाद उल्टी-सीधी चीज़ें खाने की चाहत होने लगती है। दो महीनें के बाद यह चाहत बहुत बढ़ जाती है। कभी आँखें अन्दर को धंस जाती हैं,कभी नज़र तेज़ हो जाती है। यह तमाम अ़लामतें लड़के के हमल (गर्भ) में कम पायीं जाती हैं। शहद दो तोला बारिश का पानी छः तोला दोनों मिलाकर सोते समय औरत को पिलायें सुब्ह के समय अगर उसके पेट में दर्द हो और पेचिश मालूम हो तो समझो की यह औरत हामिला (गर्भवती) है। पिस्तानों की रगें ज़्यादा नीली और पिस्तानों (छातियों)की निप्पलें अधिक काली व लम्बी हो जाती हैं। गर्भ के शुरू के तीन महीनों के अन्दर पेड़ू पर टटोलने से बच्चे दानी भारी मालूम नहीं होती। फिर धीरे-धीरे वह बढ़ता रहता है। चौथे महीने में अगर पेड़ू टटोलकर देखा जाये तो बच्चे दानी भारी महसूस होती है और कुछ सख़्त होने लगती है। पाँचवे महीने में नाभी के नीचे (क़रीब) आ जाता है और छटे महीने में नाभी तक पहुँच जाता है। सातवें महीने में नाभी से दो इंच ऊपर आ जाता है। आठवें महीने में आठ इंच ऊपर आ जाता है। नौवें महीने में पेट के मेहराब (ऊपर) तक बढ़ जाता है। माहवारी का बन्द हो जाना यह गर्भ ठहरने की खास पहचान है लेकिन किसी बीमारी की वजह से भी माहवारी रूक जाती है और गर्भ नहीं ठहरता है। गर्भवती को शुरू के दिनों में थूक बहुत आता है। कभी-कभी तो इतना थूक आता है कि स्त्री स्वंय ही परेशान हो जाती है। गर्भ ठहरने के बाद एक सप्ताह से चार सप्ताह तक सुबह के समय गर्भवती को क़ै (उबकाई) या क़ै के जैसी उछाल आती है और चौथे महीनें में यह स्वंय ही बन्द हो जाती है।

हमल ठहरने के दो महीने बाद पिस्तान (छाती) बढ़ जाती हैं और दबाने से दर्द होता है। पिस्तानों की चोंचें काली गहरी हो जाती हैं और अधिक फैले हुए और फूले हुए उठे हुए मालूम होते हैं। गर्भ के अंतिम दिनों में दूध निकलता है। चौथे महीने के अंत में या पाँचवे महीने के शुरू में बच्चा हरकत करना शुरू कर देता है। चुनाचें बच्चेदानी के दोनों तरफ़ अगर ठंडा हाथ रखा जाये तो बच्चा हरकत करता हुआ मालूम होता है। अगर बच्चेदानी पर स्टेथेस्कोप

(आला) लगाकर सुना जाए तो बच्चे के दिल की आवाज़ें सुनाई देतीं हैं। यह दिल की आवाज़े एक मिनट में 120 से 140 बार तक सुनाई देती हैं। अगर यह आवाज़े एक मिनट में 140 हों तो लड़की होने का इशारा मिलता है। इन आवाज़ों में गर्भवती के दिल की आवाज़ों का धोखा लगता है। लेकिन गर्भवती के दिल की हरकत एक मिनट में 75 बार से अधिक नहीं होती है। गर्भ ठहरने के दो महीने बाद पैशाब में हल्की चर्बी और चूने की सी सफ़ेदी आती है। जो गर्भ के अंतिम समय तक आती रहती है। इसीलिए अगर गर्भवती के क़ारूरे (पैशाब) को बोतल में रख कर देखा जाये तो चर्बी और चूने के साथ मिल कर धुनी हुई रूई की तरह एक शरीर (खाका) क़ारूरे (पैशाब) के ऊपर मालूम होता है जिससे गर्भ ठहरने की अच्छी तरह से पहचान हो सकती है।

गर्भ में लड़का है या लड़की इसकी पहचान

गर्भ में लड़का है या लड़की इसकी पहचान करने के लिए चाहिये कि गर्भवती के दूध में जूँ या चीचड़ी डाल दें ऊपर से दूध डालें अगर वह जूँ या चीचड़ी दूध से बाहर निकल आये तो जान लेना चाहिये कि लड़की का गर्भ है और अगर न निकल सके तो समझो कि गर्भ में लड़का है।

अत्याधिक खतरनाक ग़लती

धनाढ्य व्यक्ति अल्लाह की रह्मतों के मुनकिर और नाक़द्रे लोग डाक्टरों से मशीनों द्वारा औरतों के गर्भ की जांच कराते हैं कि कहीं गर्भ में लड़की तो नहीं है और अगर यह पता चल जाए कि गर्भ में लड़की है तो गर्भ गिरवा देते हैं यानी गर्भपात करा देते हैं। कुछ बेईमान डाक्टर मौक़े का फ़ायदा उठाकर कमाई के चक्कर में धन के लालच से लड़के के हमल को भी लड़की का हमल बता कर ख़ौफ़ पैदा करते हैं और निकाल देते हैं।

ख़ूब अच्छी तरह याद रखें

यह मस्अला अच्छी तरह याद रखें कि 120 दिन का गर्भ या उससे अधिक का जो गर्भ गिराया जायेगा वह ऐसा है कि जैसे किसी ज़िन्दा जानदार व्यक्ति को क़त्ल करने का गुनाह होता है। हाँ इस मुद्दत से कम का गर्भ हो और कोई बड़ी मजबूरी लाचारी हो या गर्भ की वजह से गर्भवती की जान का ख़तरा हो अधिक मजबूरी के कारण परहेज़गार आलिमे दीन से या मुफ़्तियान-ए-किराम से मस्अला पूछ कर गिरवाया जा सकता है। वे बतायेंगे कि अधिक मजबूरी किसको कहते हैं,इस सिलसिले में एक तावीज़ है जो हमारी किताब "पोशीदा ख़ज़ाने" में है उसके प्रयोग से लाभ होता है। या फिर हम (लेखक) से सम्पर्क करें।

गर्भ में लड़का या लड़की होने की एक और पहचान

कुछ पहचानें ऐसी हैं जिनसे पता लगाया जा सकता है कि गर्भ में लड़का है या लड़की इस सिलसिले में कई तज्रिबे हैं जो आमतौर पर सही हैं यक़ीनी तौर पर तो आलिमुल ग़ैब वश्शहादा अल्लाह तआला ही जानता है। वही ग़ैब का जानने वाला है।

गर्भ में लड़का-लड़की होने की कुछ और पहचानें

तज्रिबे के तौर पर गर्भ में लड़का-लड़की होने की पहचान के तरीक़े बताते हैं जिस गर्भवती के गर्भ में लड़का हो तो उस स्त्री का चेहरा साफ़-सुथरा व चमकदार होता रहता है। उस स्त्री का दिल ख़ुश रहता है और उसे जी मतलाना और बुरी चीज़ों के खाने की तमन्ना कम होती है सीधी (दाहिनी) कोख की ओर वज़न ज़्यादा महसूस होता है और बच्चे की हरकत भी दाहिनी ओर ही प्रकट होती है। जब गर्भवती के पिस्तान (छातियाँ) बढ़ने लगते हैं और उनकी रंगत में बदलाव होने लगता है तो पहले दाहिने पिस्तान में बदलाव मालूम होता है। ख़ासतौर पर दाहिने पिस्तान की निप्पल में फ़र्क़ पड़ता है। ये सब पहचानें लड़के के गर्भ में होने पर होती हैं और जब गर्भ में लड़की होती है तो ऊपर बतायी गई पहचानों का उल्टा देखने में आता है। गर्भ में लड़का होने पर गर्भवती का दूध बहुत गाढ़ा होता है कि दूध की एक या दो बूँदें शीशे पर डाल दें तो वह फैलता और बहता नहीं है। बल्कि एक ही जगह पर ठहरा रहता है और अगर उस को धूप में रख कर देखें तो चाँदी के पानी की तरह या मोती के दाने की तरह उभरा हुआ मालूम होता है और अगर इन पहचानों के ख़िलाफ़ हो तो समझना चाहिए कि लड़की का गर्भ है। अगर गर्भवती महिला उठते समय दाहिने (सीधे) हाथ पर ज़ोर देकर उठे तो यह पहचान भी लड़का होने की है और अगर बायें (उल्टे) हाथ पर ज़ोर देकर उठे तो लड़की होने की पहचान है। गर्भवती महिला जब चलने के लिए उठे अगर पहले दाहिना पैर उठा कर आगे रखे तो भी लड़का होने की पहचान है और अगर बाँया पैर उठाकर आगे रखे तो समझो लड़की का गर्भ है। अगर पेट में लड़का होता है तो वह तीन महीने के बाद हरकत करने लगता है और लड़की चार महीनें के बाद हरकत करती है।

ज़रावन्द चार माशा पीस कर शहद में मिलालें और हरे रंग के कपड़े में उसको सान कर लथेड़कर सुबह नहार मुँह गर्भवती स्त्री की योनि में रखा जाये और वह गर्भवती दोपहर तक कुछ न खाये न पिये, अगर उस समय तक

मुँह का ज़ायका मीठा हो तो गर्भ में लड़का है और अगर ज़ायका कड़वा हो तो लड़की है और अगर कोई भी ज़ायका न हो तो समझो कुछ भी नहीं है। यानी गर्भ ही नहीं ठहरा।

लड़का पैदा होने के उसूल

लड़का या लड़की पैदा होना यह किसी व्यक्ति के बस में नहीं है। बल्कि इन्सानों के और तमाम कायनात (ब्रहमाण्ड) के पैदा करने वाले खालिक़ व मालिक के ही कब्ज़े में है। पहले ज़माने से ही व्यक्ति लड़कियों के पैदा होने को बुरा समझते रहे हैं और लड़कों के पैदा होने को अच्छा जानते हैं। हाँलाकि यह लोगों का नज़रिया सरासर ग़लत है बल्कि लड़का अल्लाह की नेमत है और लड़की अल्लाह की रहमत है जहाँ रहमत होती है वहाँ नेमत भी ज़रूर होती है और जहाँ नेमत हो वहाँ रहमत भी हो यह बात ज़रूरी नहीं है फिर भी कुछ ऐसे असबाब हैं कि रब्बुल आलमीन अगर चाहे तो इन्सान की कोशिश में जान डाल दे। कुछ लोगों के लड़की ही लड़की पैदा होती हैं लड़का पैदा नहीं होता तो ऐसे लोगों को चाहिये कि सब्र इख्तियार करें और अल्लाह तआला से बराबर माँगते रहें।

सबब के तौर पर लड़का पैदा होने का पोशीदा राज़

जिस औरत के हमेशा लड़कियाँ ही पैदा होती हों और लड़के की चाहत हो तो यह अमल करें। गर्भ के शुरू से स्त्री का शौहर या कोई दूसरी स्त्री उस गर्भ वाली स्त्री के पेट पर प्रतिदिन चालीस बार "या मुसव्विर उंगली से गोल दायरा बनाते हुए पढ़ लिया करे इंशाअल्लाह फ़ज़्ले रब्बी लड़का होगा"। यह अमल भी फ़ायदेमंद है कि ऊपर की तरह स्त्री के पेट पर उंगली से गोल दायरा 70 बार बनायें और हर बार "या मतीन" पढ़ा जाये।

नोटः इस सिलसिले में हमारी किताब "पौशीदा ख़ज़ाने" का पढ़ना भी फ़ायदेमंद होगा।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अल्लाह तआला के नाम की बरकत

इसी सिलसिले में जब औरत का गर्भ ठहर जाये तो गर्भ के शुरू से ही उस जनीन (पेट में जो बच्चा है) का नाम मुहम्मद रख दें। कुछ बुज़ुर्गों और अल्लाह वालों का कहना है कि उस जनीन (पैदा होने वाले) का नाम अल्लाह के नाम से मिलाकर रखें तो इन नामों की बरकत से लड़का होता है।

नोटः जो बात समझ में न आये मालूम कर सकते हैं जवाब के लिए जवाबी ख़त आना चाहिए वरना जवाब मिलना मुश्किल होगा। मुहम्मद अशरफ़ अमरोही

तद्बीर के तौर पर लड़का पैदा होने का एक और उसूल

अगर पति माहवारी ख़त्म होने के तुंरत बाद सम्भोग करे तो उससे जो गर्भ होगा अगर अल्लाह ने चाहा तो लड़की का होगा और अगर माहवारी ख़त्म होने के बारहवें दिन के बाद गर्भ होगा तो उससे खुदा ने चाहा तो लड़का होगा।

लड़के के जन्म के लिए सबब के तौर पर ग़िज़ा

एक वली-ए-कामिल (पूरे वली) हज़रत अल्लामा इमाम ज़हबी रह० ने फ़रमाया जो कि आज़माया हुआ है कि अगर गर्भवती स्त्री को शुरू से हमल की हालत में खजूरें कुछ माह खिलाई जायें तो इससे लड़का पैदा होने के लक्षण अधिक होते हैं।

लड़के के जन्म का गुप्त भेद

जिस क़द्र अधिक ख़ुशहाली और चैन की ज़िन्दगी पति-पत्नी की होगी तो उन के यहाँ लड़कियाँ अधिक पैदा होती हैं और जिनके यहाँ ज़िन्दगी तंग और परेशानी की होगी तो उनके यहाँ लड़के अधिक जन्म लेंगे।

लड़का व लड़की के जन्म का गुप्त भेद

यह बात मालूम होनी चाहिये कि अगर पति पत्नी से अधिक शक्तिशाली है कि मर्द का वीर्य स्त्री के वीर्य पर ग़ालिब है तो उन के यहाँ लड़का होता है और अगर स्त्री की मनी (वीर्य) पुरूष की मनी (वीर्य) पर ग़ालिब है तो लड़की के पैदा होने की आशा है और अगर दोनों बराबर हैं तो हीजड़ा (जन्खा) भी पैदा हो सकता है। ज़्यादा मालूमात के लिए 'तन्हाई के सबक़' को पढ़ें।

लड़का पैदा होने का सबब के तौर पर नया उसूल

हर पुरूष के दो फ़ोते होते हैं जिसे हम पीछे लिख चुके हैं उन फ़ोतों में वीर्य होता है दायीं तरफ़ के फ़ोते में लड़के के बनने और बायीं तरफ़ के फ़ोते में लड़की के बनने का वीर्य होता है जब लड़के की चाहत हो तो पति सम्भोग के समय दायीं तरफ़ के फ़ोते को ऊपर की ओर चढ़ा ले और बायीं तरफ़ के फ़ोते पर रबड़ चढ़ा ले ताकि वह ऊपर न आये नीचे ही रहे और अगर लड़की की चाहत हो तो सम्भोग के समय बायीं तरफ़ के फ़ोते को ऊपर की ओर किसी डोरी से कर ले और सीधी तरफ़ वाले फ़ोते पर रबड़ चढ़ा दे। ताकि वह नीचे की ओर झुका रहे। यह उसूल अक़्लमन्दों का तज्रिबा है, इस तरह कि एक बकरे का सीधी तरफ़ का फ़ोता निकाल कर बकरी के पास छोड़ा तो उस बकरी से

सब बच्चे मादा (बकरी) पैदा हुए फिर एक दूसरा बकरा ले कर उसका बांया फ़ोता निकाल कर जब बकरी पर छोड़ा गया तो सब नर बच्चे (बकरे) पैदा हुए फिर यह ही तज्रिबा कुत्ते पर किया गया तो सही निकला फिर बन्दर और ख़रगोश पर किया गया तो दोनों पर सही साबित हुआ कि दायीं तरफ़ के फ़ोते में लड़के का और बायीं तरफ़ के फ़ोते में लड़की का वीर्य होता है।

यह बात अवश्य ध्यान में रखें

ये तमाम उसूल तज्रिबे के तौर पर हैं वरना तो सब कुछ लड़के या लड़कियां देने न देने, होने न होने का पूरा इख़्तियार मालिक-ए-कायनात के क़ब्ज़ा व क़ुदरत में है। कोशिश करना इन्सान का काम है और उस कोशिश में जान डालना ख़ालिक़ के हाथ में है।

हसीन ख़ूबसूरत औलाद के जन्म का उसूल

अगर कोई यह चाहें कि उसकी औलाद ख़ूबसूरत पैदा हो तो चाहिये कि एक ख़ूबसूरत बच्चे का फ़ोटो लेकर उस जगह लगा दे कि सम्भोग के समय स्त्री की नज़र उस पर पड़े और स्त्री उस समय उस को देखे तो औलाद इस प्रकार होगी जैसी फ़ोटो में देखी गयी होगी।

आवश्यक सूचना

मुसलमानों के पाक धर्म ने हर जानदार का फ़ोटो बनाना और घर में लगाना मना किया है चाहे वह किसी का भी फ़ोटो हो लिहाज़ा यह अमल करने के लिए सिर्फ़ उसी समय प्रयोग करें बाद में फ़ोटो हटा दें। हदीस-ए-पाक में है कि जिस घर में जानदार की तस्वीर होती है वहाँ रहमते इलाही के फ़रिश्ते नहीं आते।

हसीन औलाद पैदा होने का एक और उसूल

यह बात आज़माई हुई है और अक़्ल मन्दों ने बतायी है कि अगर गर्भवती गर्भ में ख़ुश रहे और किसी तरह का रंज व ग़म पास न फटकने दे तो औलाद ख़ूबसूरत पैदा होगी।

एक नसीहत का लतीफ़ा

एक स्त्री ने पूछा कि मेरे बच्चे काले क्यों पैदा होते हैं? तो उसका जवाब यह दिया गया कि जब पति पत्नी को देखता है तो उससे जलता है और इसी प्रकार पत्नी भी पति को देखकर जलती है और बच्चा अन्दर ही अन्दर जलता है और जो चीज़ जल जाती है आमतौर पर काली हो जाती है इसलिए बच्चे काले पैदा होते हैं।

सुन्दर औलाद पैदा होने की ग़िज़ा

गर्भवती अगर ज़्यादातर खरबूज़ा खाये तो होने वाली औलाद खूबसूरत पैदा होती है। कुछ हकीमों ने कहा है कि संतरा खाने से भी औलाद हसीन पैदा होती है।

सुन्दर बालक के जन्म का एक और उसूल

गर्भवती अगर सफ़ेद रंग की वस्तुओं का प्रयोग ज़्यादा करे खाने में भी सफ़ेद चीज़ें जैसे दूध, खीर, फीरनी आदि और पहनने ओढ़ने में भी सफ़ेद रंग का प्रयोग करे तो पैदा होने वाली औलाद गोरी पैदा होती है।

सुन्दर औलाद के जन्म के लिए कुछ लोगों का तज्रिबा

कुछ लोगों का तज्रिबा है और लोगों ने बयान भी किया है कि अगर गर्भवती स्त्री दूध में ज़ाफ़रान मिलाकर मुनासिब मिक़्दार पिये तो औलाद हसीन पैदा होगी परंतु केसर युक्त दूध सुबह को सेवन करें या रात को।

सुन्दर बालक के जन्म का शुभ गुर

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि० का फ़रमान-ए-मुबारक है कि भोजन करते समय जो खाना दस्तरख्वान पर गिर जाये फिर उसको उठाकर जो इन्सान खाने की आदत रखेगा तो उसकी जो औलाद पैदा होगी वह हिमाक़त व बेवक़ूफ़ी से महफ़ूज़ रहेगी और मुसीबत से आज़ाद रहेगी और औलाद हसीन पैदा होगी।

औलाद सुन्दर व सरलता से जन्म होने के लिए

अगर गर्भ के दौरान औरत गुलक़न्द खाती रहे तो बच्चे को बहुत आसानी से जन्म देती है और बच्चा भी खूबसूरत पैदा होता है। ज़्यादा मालूमात के लिए "तन्हाई के सबक़" को पढ़ें।

गर्भ निरोधक दवायें

वे दवायें जिन के प्रयोग से स्त्री को गर्भ नहीं होता वे ये हैं कि माज़ूफल बारीक पीस कर उसे रूई में लथेड़ लें और सम्भोग से पहले उस रूई को मुत्रशाला (योनि) में रख दिया जाये तो गर्भ नहीं होता आज़माया हुआ है स्त्री अगर तुख्मे अरंडछिला हुआएक अदद खाये तो एक साल तक गर्भ नहीं होगा और अगर दो अदद खाये तो दो वर्ष तक इस प्रकार जितने खायेगी उतने ही वर्ष तक गर्भवती नहीं होगी। अगर पुरूष अपने लिंग पर सुहागा सदाब के पानी में घिसकर लगाये और सम्भोग करे तो स्त्री को गर्भ नहीं होगा।

बर्थ कन्ट्रोल के लिए दवा

चूने के ऊपर का पानी व तिल का तेल बराबर ले कर एक बोतल में मिला लें और ज़ोर से हिलायें जब मक्खन की तरह हो जाये तो सम्भोग से पहले लिंग पर लगाकर सम्भोग करने से स्त्री को गर्भ नहीं होगा। ज़्यादा मालूमात के लिए "तन्हाई के सबक़" को पढ़ें।

पूरी उम्र स्त्री को गर्भ न हो

ये वे दवायें हैं जिनसे स्त्री पूरी उम्र गर्भवती बनने से बची रहेगी। (1) अगर स्त्री अपने हेज़ माहवारी का रक्त (खून) जो पहली बार आये उसे अपने पूरे शरीर पर मल डाले तो तमाम उम्र हामिला (गर्भवती) नहीं होगी। यह अमल फ़ाहिशा रंडियों तवायफ़ों का है जिसको अल्लामा इमाम दमीरी रह०अलैहि ने बयान फ़रमाया है (2) काला ज़ीरा, तुख़्मे हलीला काबली, नाग केसर ,नरकचूर, कलोंजी-कायफ़ल ये सब एक-एक तोला कूट छानकर सात खुराकें बना लें और एक-एक खुराक माहवारी की हालत में रोज़ाना सात दिन तक खिलायें (3) दार-ए-फ़िल-फ़िल, बाये बड़ंग सुहागा हम वज़न पीस कर दूध के साथ माहवारी के समाप्त होने पर पिलायें "हकीम साहिबान के मश्वरे ही से दवायें बनायें"।

स्त्री व पुरूष की जाँच कि औलाद हो सकती है या नहीं

इस बात का पता लगाना कि औलाद न होने की कमी मर्द की तरफ़ से है या स्त्री की तरफ़ से तो इस की विधि यह है कि पुरूष का पैशाब लेकर एक लोकी के पेड़ की जड़ में डालें और स्त्री का पैशाब लेकर दूसरी लोकी के पेड़ की जड़ में डालें जिसका पैशाब लोकी के पेड़ की जड़ के नीचे डालनें से पेड़ को सुखा दें तो उसकी कमी होगी।

बे औलाद स्त्री व पुरूष की जाँच किस प्रकार हो

बे औलाद स्त्री व पुरूष की पहचान की विधि एक यह भी है कि गैहूँ और बाक़ला और जौ के सात-सात दाने लें और हर एक के दो-दो दाने मिट्टी में बोयें और पुरूष व स्त्री को अलग-अलग पैशाब करने के .लए कहें बस जिस के पैशाब से दाने न उगें उसी में कमी है। यह जाँच उस स्त्री व पुरूष की है जिसके वीर्य में बच्चा पैदा करने की ताक़त नहीं होती अस्ल में स्त्री व पुरूष के वीर्य ही से बच्चे बनते हैं जैसाकि कुछ पेड़ों पर फल नहीं आते, ऐसी औरत को बाँझ कहते हैं लिहाज़ा बे औलाद वाले पहले अपने बाँझ पन का इलाज करायें अगर कोई सही हकीम मिल जाये और ध्यान से इलाज किया जाये तो बड़ी सफलता से बाँझपन दूर हो सकता है।

स्त्री का बाँझपन किस प्रकार मालूम करें

स्त्री के बाँझपन को इस प्रकार भी जाना जा सकता है कि लहसन की एक पूथी को एक रूई के टुकड़े में लेकर स्त्री अपनी पैशाब की जगह में सात या आठ घंटे रखे अगर उसके मुँह में लहसन की बू आने लगे तो इसका इलाज दवाओं से हो सकता है और इलाज के बाद स्त्री गर्भवती बनने के लायक़ हो जायेगी और अगर बू न आये तो उसे लाइलाज समझना चाहिए।

स्त्री व पुरूष की जाँच का एक और तरीक़ा

स्त्री व पुरूष की जाँच इस प्रकार भी हो सकती है कि पुरूष का वीर्य और स्त्री का वीर्य अलग-अलग पानी में डाला जाये जिसका वीर्य ऊपर तैरता रहे उसमें कमी है और यह कि दूरबीन के द्वारा स्त्री पुरूष के वीर्य की जाँच हो जिसकी मनी में कीड़े न हों या उसमें रक्त व पीप की मिलावट हो तो उसमें कमी जानी जायेगी।

अगर शीघ्र पतन होता है

अगर शीघ्र पतन का रोग है तो यह कई प्रकार से हो सकता है। कभी तो इतनी जल्दी हो जाता है कि लिंग योनि के अन्दर भी नहीं जा पाता और इंज़ाल हो जाता है तो यह रोग है। इसको सुरअ़त-ए-इन्ज़ाल भी कहते है। परन्तु अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ देर से वीर्य का निकलना शीघ्र पतन (सुरअ़त ए इन्ज़ाल) नहीं कहलायेगा। इन्ज़ाल में रूकावट को इम्‌साक कहते हैं। इस रूकावट की मुद्दत तय नहीं है। हरकत के साथ ज़्यादा से ज़्यादा पाँच मिन्ट और कुछ लोगों को इससे भी ज़्यादा हो सकता है। हरकल के साथ आधे मिन्ट तक इम्‌साक होना कम से कम मुद्दत है। अगर इस से पहले या लिंग के घुसने से पहले वीर्य निकल जाता है तो इसका इलाज आवश्यक है। शीघ्र पतन के बहुत से कारण हैं और सब के इलाज भी अलग-अलग हैं। "इम्साक (रूकावट) से मुताल्लिक़ ज़रूरी मालूमात के लिए इम्साक के गुर व क़ानून Rs.20/- का मनी आर्डर भेज कर लेखक के पते से मंगवा सकते हैं।"

अवश्यक सूचना शीघ्र पतने के रोगी के लिए

शीघ्र पतन के रोगी रूकावट पैदा करने हेतु दवायें तलाश करते दिखाई देते हैं तो वे व्यक्ति खूब समझ लें कि बिना सोचे इम्साक की दवा न खायें बल्कि उसका कारण मालूम करें फिर इलाज करें आ़म बदनी कमज़ोरी को दूर करने के लिए इलाज करें। कुछ नुस्ख़े इम्साक के लिए लिखता हूँ।

शीघ्र पतन का नुस्ख़ा

अक़रक़रहा, सोंठ, ख़ोलन्जान, लोंग केसर ये सब एक-एक माशा सोरिनजान, क़रनफ़ल दो-दो माशा लेकर कूट छान कर एक पाव दूध में एक चमचा मलाई और एक चमचा चीनी के साथ सेवन करें।

शीघ्र पतन के रोगी के लिए बेहतरीन नुस्ख़ा

ज़ोज्या, क़रनफ़ल एक-एक माशा, केसर रित्ती भर, मुश्क अफ़्यून एक-एक रित्ती सब को बारीक करके शहद में मिलाकर चनें बराबर टेबलेट बनायें और एक गोली सम्भोग से पहले सेवन करें पाँच मिन्ट के बाद सम्भोग करें।

आवश्यक सूचना

इस रोग में खटाई बहुत हानि पहुँचाती है लिहाज़ा खटाई छोड़ दें वरना दवाई असर न करेगी और नंगी फ़ोटो कभी न देखें सेक्सी फ़िल्मों से भी दूर रहें।

एक सच्चा वाक़िआ

मेरे एक ख़ास दोस्त सेलमपुर दिल्ली के रहने वाले बड़े अच्छे परहेज़गार जोकि आयुर्वेदिक डाक्टर भी हैं उन्होंने मुझे बताया कि मेरा अपना तज्रिबा है कि अगर सही तंदुरुस्त व्यक्ति हो और अपने ख़याल को साफ़ रखे किसी प्रकार की बदनज़री न करे न दिमाग़ी और न ख्याली हर प्रकार के गन्दे ख्याल न रखे तो बताया डाक्टर साहब ने कि बहुत इम्साक (रूकावट) होता है और इतना होगा जितना वह चाहे। कहते हैं आधे-आधे घंटे का तज्रिबा है। लिहाज़ा शीघ्र पतन रोगी गंदे ख्याल से बचें और सम्भोग के समय भी ध्यान उधर न लगायें क्योंकि इसका दिमाग़ से लगाव है कि जितना दिमाग़ सम्भोग के समय स्त्री की तरफ़ होगा इन्ज़ाल जल्द होगा।

रूकावट के लिए एक अमल

एक तरीक़ा यह है कि जब वीर्य निकलने का समय हो तो पुरूष हरकत रोक ले और साँस खूब ज़ोर से अन्दर की तरफ़ खींचे फिर शुरू करे और धीरे-धीरे साँस छोड़े फिर जब इन्ज़ाल होने को आए ज़ोर से तेज़ी के साथ साँस अन्दर खींच ले फिर धीर-धीरे छोड़े मुद्दत लम्बी हो जायेगी ।

शीघ्र पतन रोगी को हिदायत

ऐसे व्यक्ति ज़्यादा तेज़ गर्म दवाओं को न खायें। नशीले पदार्थों से बचें नशीली वस्तुएं वक़्ती चीज़ें हैं। बुढ़ापे में नुक़्सान पहुँचाती हैं पहले मज़ा फिर सज़ा सही सादिक़ आता है।

रूकावट का नुस्ख़ा

गोखरू तालमखाना सितावर, मूसली सफ़ेद, कौंच का मग़ज़, अक़र क़रहा, तुख़्मे रेहान, क़ंद सफ़ेद इन तमाम को बराबर-बराबर ले कर बारीक पाउडर बना लें एक तोला गुनगुने दूध से खायें।

रूकावट का मुजर्रब नुस्ख़ा

इमली के बीज भून लें ऊपर का छिलका ऊतार दें और बारीक पीस कर उसमें एक वर्ष पुराने गुड़ का क़िवाम बना कर डालें और तुख़्मे प्लास, तुख़्मे सिर्स बारीक करके मिलायें और चने बराबर गोलियाँ बना लें तीन गोलियाँ रात को सोते समय गुनगुने दूध से सेवन करें बहुत अ़जीब नुस्ख़ा है। "अगर बनाना मुश्किल हो तो लेखक से बना बनाया हासिल करें"

एक दूसरा नुस्ख़ा

यह नुस्ख़ा शीघ्र पतन और जिर्यान के लिए भी लाभकारी है बबूल की फली, बबूल की छाल, बबूल का गोंद, बबूल की कोंपल बराबर-बराबर कूट-छान कर सफ़ूफ़ बना लें ढाक का गोंद भी मिला लें तो अधि गुणकारी है, गैहूं के आटे की भूसी पुराना गुड़ मिलाकर हलुवा बनाने के बाद एक तोला दूध से सेवन करें।

शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, जिर्यान का नुस्ख़ा

यह नुस्ख़ा मोहतरम जनाब हकीम डाक्टर मो०हसन साहब रह० का हज़ारों रोगियों पर आज़माया हुआ है और तीर की तरह जल्द लाभ करता है। जो व्यक्ति तज़्रिबा करेंगे वही इसकी क़द्र करेंगे। तुख़्मे हुलहुल, तुख़्मे मोलसरी, तुख़्मे सिर्स, तुख़्मे निलोफ़र, तुख़्मे लाजवन्ती, तालमखाना मोचरस मोफली सब दो-दो तोला और दाल सफ़ेद बड़ के दूध में तर करके सुखाई हुई सत सलाजीत एक तोला सत गुलू एक तोला कूट पीस कर छान लें। छ माशा सुबह-शाम गाय के दूध के साथ खायें जिर्यान, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष में प्रयोग करें वीर्य को गढा करेगा तज़्रिबा करें।

सम्भोग के मज़े से स्त्री को क़ैद करने का तिला

अगर किसी की पत्नी फ़ाहिशा होने लगे या हो जाये कि ग़ैर मर्द के पास जाने लगे और शौहर यह चाहे कि मेरी बीवी मेरे अ़लावा किसी से न मिले और न कोई उसके पास आ सके तो उसके लिए यह करे, कंधी से निकले हुए बाल या उसके सिवा इन्सानी बाल आग में जलाकर राख बना ले फिर उसे मक्खन में मिलाकर तिला कर ले और उसे लिंग पर लगाकर सम्भोग करे तो इससे स्त्री को बड़ा मज़ा आयेगा और वह किसी के पास जाना पसन्द न करेगी

और अपने पति को बहुत चाहेगी और खुश रहेगी। हाँ मगर उस आदमी के पास जा सकती है कि जो इस तरह अ़मल करेगा।

तिला ए ख़ास लज़्ज़त के लिए

काफ़ूर, मनुष्य के सर के जले हुए बालों की राख दोनों बराबर-बराबर लें और उससे दो हिस्से अधिक शहद ले कर मिलायें सम्भोग से एक घंटा पहले लिंग पर मल लें बेहद लाभ होगा प्रयोग करने वाले करके देखें। "ज़रूरत मंद लेखक से हासिल कर सकते हैं"

तिला ए अ़जीबो-ग़रीब

लाल चींटियाँ जो आम के पेड़ पर होती हैं लगभग तीन सौ लेकर एक कि० गाय के दूध में उबालें फिर उस से मक्खन निकालें और सम्भोग से पहले गर्म करके लिंग पर सुपारी छोड़कर चंद बूंदे लगायें और मालिश करें यहाँ तक कि सूख जाये। एक घंटे बाद काम करें लिंग इससे मोटा भी होगा और अगर लिंग छोटा है तो लम्बा भी हो जायेगा।

छाती को सख़्त करने के लिए

अनार का छिलका एक किलो लें और चार किलो पानी में पकायें ताकि पानी आधा रह जाये फिर आधा किलो तिल का तेल मिलायें और फिर इतना पकायें कि पानी पूरा सूख जाये फिर कपड़े में छान लें और बोतल में करके रखलें फिर ढीली छातियों पर कुछ दिन लगातार मालिश करें सख़्त हो जायेंगी "ज़रूरत मंद लेखक से दवा मंगवा सकते हैं"।

जिर्यान का मुख़्तसर (संक्षिप्त) बयान

बिना इरादे और हरकत के वीर्य निकल जाता है किसी को पैशाब से पहले या बाद या साथ-साथ ही निकल जाता है या मेहनत का काम करते में या बोझ उठाते वक़्त या शेहवत का ख़्याल आने से या छूने से भी निकल जाता है कभी लेटरीन में ज़ोर लगाने से भी वीर्य निकलता है। आ़मतौर पर सोने की हालत में निकलता है। वीर्य शरीर की जान होता है इसलिए कि इसके निकलने से बदन में काहिली व सुस्ती पैदा हो जाती है इसलिए जिर्यान के रोगी की कमर में दर्द ख़ासकर दिमाग़ के पट्ठे कमज़ोर हो जाते हैं। जिस्मानी कमज़ोरी हो जाती है। मिज़ाज में चिड़चिड़ापन किसी काम को करने को दिल भी नहीं चाहता सोने को जी चाहता है। याददाश्त कम हो जाती है। चेहरा डरावना सा हो जाता है। स्त्री से भी लगाव कम हो जाता है किसी से बात करने को भी जी नहीं चाहता। अंधेरा भला लगता है अंधेरे में रहने को दिल चाहता है; जिर्यान का रोगी सदा रंज व ग़म

में रहता है। कभी तो ज़हर खाने को तैयार हो जाता है। कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती ये पहचानें जिर्यान के रोगी की हैं।

इस रोग के अन्य कारण

इस रोग के कई कारण हैं उदाहरण के तौर परःजवानी की दीवानगी के समय हाथ से वीर्य निकालने की आदत के कारण 2. (लिवातत) लौंडे बाज़ी की वजह से 3. पेट के सदा ख़राब रहने से व क़ब्ज़ की वजह से 4. कभी अधिक गर्म और देर हाज़िम भोजन खाने से 5. अधिक सम्भोग के कारण 6.अधिक पेट भरे पर सम्भोग के कारण, गंदे इशक़िया ख्याल के कारण भी यह रोग पैदा हो जाता है।

स्वप्न दोष के चार कारण हैं

(1) गंदे ख्याल व ख्वाब देखकर। (2) बदहज़्मी और पेट की ख़राबी से। (3). मसाने की कमज़ोरी से। (4). वीर्य की थेली भर जाने की वजह से इसलिए अब जो नया वीर्य बनेगा वह बाहर आ जायेगा। इस चोथी वजह से जो स्वप्न दोष होगा उससे कमज़ोरी न होगी क्योंकि वह ज़्यादा था निकल गया पहली तीन वजह से जिर्यान और स्वप्न दोष हो तो इलाज करायें।

नोटः गंदे ख्याल वाले रोगी के लिए कुछ पढ़ने के अमल हैं जिनका पूरा ज़िक्र हमारी दूसरी किताब "पोशीदा खज़ाने" में पढ़ें। उसमें कुछ हिदायातें लिखी हैं जिनको अमल में लाने से तथा हकीम की बताई हुई तदाबीर से बड़ी सरलता से लाभ उठा सकतें हैं। अच्छे हकीम से सम्पर्क करें।

स्वप्न दोष के रोगी का इलाज

जिन व्यक्तियों का मिज़ाज गर्म हो वीर्य पतला हो गया हो बदन सूख गया हो स्वप्न दोष भी अधिक होता हो तो सिंभल (सेमर) के फूल तोड़कर उसकी पंखड़ियाँ, साफ़ करके गुलक़न्द बना लें उसमें चारों मग़ज़ दाना इलायची बक़दर ए ज़रूरत मिलायें सुबह या रात को एक तोला गाय के हल्के गर्म दूध से सेवन करें इन्शाअल्लाह आठ दिन में लाभ हो जायेगा। हकीम से परहेज़ पूछ लें।

स्वप्न दोष के अधिक होने पर यह दवा करें

स्वप्न दोष की शिकायत वाले रोगी के लिए लाभदायक है कि वह पका हुआ एक केला लेकर उसमें तीन रत्ती क़ल्मी शोरा भर कर छिलका उतार कर रात को थाली में रख कर बाहर छत पर रख दें ताकि उस पर औस (शबनम)पड़ती रहे। शबनम न गिरती हो जब भी बाहर ही रखें और सुबह सबसे पहले उसे खायें दो केले रख दें ताकि एक शाम को भी खा सकें। यह दवा आठ दिन करें।

बेहतर यह है कि तजुर्बे कार हकीम से ही इलाज करायें क्योंकि हकीम पहले ज़िक्र किये गए चारों कारणों का ख़्याल रखेगा फिर इलाज करेगा।

जल्क़ यानी हाथ से वीर्य निकालना

यह बुरी आदत है हुज़ूर स०अ०व० ने इसे हराम बताया है। ऐसा करने वाले को सम्भोग से अधिक नुक़सान होता है यह बुरी आदत पूरे ही शरीर पर बुरा असर डालती है इससे जानलेवा रोग जन्म लेते हैं इससे आमतौर पर तमाम जिस्म और ख़ासकर दिल-दिमाग़, लिंग तबाह हो जाते हैं और जिसके ये अंग तबाह हुए उसकी तो ज़िन्दगी ही तबाह हो गई यह बुरी आदत हर उम्र में पैदा हो सकती है और जो व्यक्ति इस का आदी होता है वह इस ख़बीस काम को बार-बार करता है वह इस के बिना नहीं रहता।

यह सच्चा वाक़िआ है

मेरे पास एक रोगी आया और उसने बताया कि मैंने इस बुरी आदत को इतना किया कि मैं जब भी लेटरीन में जाता हूँ बिना यह किये नहीं रह पाता हूँ बल्कि केवल इस काम को करने के लिए कई-कई दफ़ा लेटरीन जाता हूँ आख़िर कार मेरा यह हाल हुआ कि वीर्य निकलते-निकलते खून निकलने लगा अब खून देख कर मुझे अक़्ल आयी और अब मैं ऐसा हो गया हूँ कि कोई मेरी क़ब्र खोद दे और मैं उसमें जाकर मर जाऊँ।

जल्क़ के नुक़्सानात व पहचानें

यह हाल आख़िर में उन लोगों का हो जाता है जो अभी ऊपर आपने पढ़ा इस बुरी आदत का रोगी अपने चेहरे की चमक खो देता है चेहरा ख़राब होने के कारण शीशा भी नहीं देखता और देखने वालों को भी ऐसा लगता है कि यह व्यक्ति गहरी सोच में है। तमाम शरीर कमज़ोर हो जाता है दिमाग़ में ताक़त नहीं रहती।

जल्क़ के रोगी की अलामतें

इस बुरी आदत के व्यक्ति के सर में दर्द, दिमाग़ में दर्द, टागों में दर्द, कमर में दर्द चकराहट की बीमारी, शक की बीमारी पैदा हो जाती है और इतना कमज़ोर हो जाता है कि टांगों में खड़े होने की शक्ति नहीं रहती। कमर में बैठने की शक्ति नहीं रहती लेटने से पसलियाँ दुखती हैं और कभी तो चलते-फिरते भी बिना निश्चय पेशाब निकल जाता है, बल्कि वीर्य भी उठते-बैठते खुद निकल जाता है और स्वप्नदोष की मात्रा भी अधिक हो जाती है चाहे रात हो या दिन वीर्य इतना पतला हो जाता है कि निकलते समय पता भी नहीं चलता।

कभी वीर्य बिल्कुल पेशाब की तरह निकलता है ऐसा आदमी उसे पेशाब ही समझता है। वीर्य के कीड़े नष्ट हो जाते हैं जिससे औलाद का जन्म नहीं होता, लिंग की रगें टूट जाती हैं। स्त्री की मूत्रशाला में कुदरत ने ऐसी तरी (रतूबत) पैदा की है जो लिंग व सुपारी (अगला भाग) को रगड़ की चोट से बचाती है। हाथ के अंदर यह रतूबत नहीं होती न ही पैदा की जा सकती है जिसका नतीजा लिंग की खराबी और बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं होता। इसलिए हाथ से वीर्य निकालने वाला व्यक्ति बलात्कार करने वाले से अधिक नुक़्सान में रहता है। इस रोग की तरफ़ जल्दी ध्यान दें। माता पिता बच्चों को रोकें या टीचर से मना करवाएँ या इस किताब को पढ़ने के लिए कहें अच्छे हकीम से इलाज कराएँ। चाट या खटाई या जो हकीम मना करे उससे बचें वरना इलाज में सफलता नहीं मिलेगी।

जल्क़ के रोगी से संबंधित बातें

जैसा कि हमने हाथ से वीर्य निकालने की बुराइयाँ बताई हैं और हक़ीक़त भी यही है कि यह ख़बीस आ़दत है। अधिकतर यह हरकत हाथ से की जाती है परंतु दूसरे भी गंदे तरीक़े हैं। यह आ़दत पहले समय से बहुत से मुल्कों में चली आई है और अब भी मौजूद है अगरचे यह ज़माना होशियारी का समझा जाता है परंतु इस दौर में भी यह आ़दत मौजूद है अधिकतर वे व्यक्ति जो बे शादीशुदा हैं और तन्हाई में ज़िंदगी बिताते हैं या किसी बुरी सोसाइटी में रहते हैं उनको यह गंदा रोग हो जाता है। फ़ुर्सत के समय या लैटरिन में या बाथरूम में इस हलाक करने वाले रोग से कुछ समय मस्ती की ख़ातिर अपनी जवानी की ताक़त खो देते हैं और सारी उम्र का रंज मोल ले लेते हैं। कुछ व्यक्तियों को यह रोग लिंग में खुजली के कारण होता है क्योंकि जब वह खुजलाते हैं तो लिंग हरकत करता है और यह रोग जन्म लेता है और कभी नौजवानों में खयालात के कारण जोश उठता है या सेक्सी किताबें देखने से या गन्दे नाविल पढ़ने से फ़िल्मों में इश्क़िया सीनों,मनाज़िर से इसका जन्म होता है और बुरी सोसाइटी का शैतान इस ख़बीस हरकत को अ़मली सूरत में लाकर आने वाले बुरे रिज़ल्ट से भटकाकर ज़िल्लत के कुएँ में फेंक देता है।

हाथ से वीर्य निकालने का नुक़्सान

इस बुरी आ़दत से बहुत से नुक़्सान होते हैं मुख़्तसर यह है कि लिंग को हाथ की रगड़ लगने के कारण रगें दब जाती हैं और वह ढीली पड़ जाती हैं जिसके कारण लिंग टेढ़ा और ढीला होकर सिकुड़ जाता है और ऐसे रोगी का लिंग जोश के समय भली भाँति खड़ा नहीं होता लिंग की जड़ पतली पड़ जाती

है ऊपर से मोटा नीचे से पतला और कभी साइज़ में भी छोटा हो जाता है। पैशाब की धार भी सीधी नहीं जाती। रगें दबने से रक्त का ज़ोर हल्का हो जाता है जिसके कारण जोश जल्द समाप्त हो जाता है। पैशाब जल्दी-जल्दी व जलकर आता है स्वप्नदोष की मात्रा बढ़ जाती है। कम्ज़ोरी में बढ़ोतरी हो जाती है अगर इस रोग का इलाज न कराया जाये या यह आदत बाक़ी रहे तो दिल, दिमाग़, जिगर, गुर्दे और मेदा काम करना छोड़ देते हैं। सर में दर्द रहने लगता है चक्कर आते हैं दिल हिलने लगता है अच्छा रक्त नहीं बनता और मेदे का कार्य गड़बड़ हो जाता है भूख बन्द हो जाती है। क़ब्ज़ रहने लगता है। गुर्दे कम्ज़ोर हो जाते हैं चर्बी घुलकर पेशाब में आने लगती है तमाम जिस्मानी ताक़त में गिरावट होने लगती है।

जल्क़ के रोगी की विशेष पहचान

जल्क़ के रोगी की पहचान यह है कि चेहरे व नाख़ुनों के नीचे ख़ून की सुर्ख़ी नहीं रहती बल्कि सफ़ेदी पाई जाती है। रोगी की पुतलियाँ हिसाब से अधिक फैली होती हैं।जल्क़ का रोगी बात करने वाले से निगाह नहीं मिलाता। पैरों पर नज़र रहती है। आवाज़ का लेहजा कम्ज़ोर, चेहरे पर हवाईयाँ उड़ती हैं। आँखों के नीचे काले चिन्ह (निशान) हो जाते हैं। शक्ल डरावनी हो जाती है।

जल्क़ के रोगी का अन्त

जल्क़ के रोगी का अन्त यह है कि कभी तो मिर्गी की बीमारी और कभी हाथ-पैर काँपने का रोग (राशा) दीवानापन टी.बी. का रोग हो जाता है और बुरी हालत व बेबसी में दुनिया को छोड़कर चला जाता है।

इग़्लाम (लोंडेबाज़ी करने) का बयान

इग़्लाम यानी मनुष्य अपने हाथ की हरकत से वीर्य को नाश करने के बजाए अपने महबूब लड़के के साथ फ़ितरत के ख़िलाफ़ बदफ़ेली करता है। इस प्रकार वह अपनी ज़िन्दगी के माद्दे को मिटाकर लानत का लिबास पहन लेता है और यह इग़्लाम बाज़ी अधिक ख़बीस आदत है। घिनावनी आदत है इससे बढ़कर कोई बुरी आदत नहीं। यह लोंडेबाज़ी की गंदी आदत तो ज़िना,(बलात्कार) जल्क़ (हाथ से वीर्य निकालने) से भी अधिक बरबाद करने वाली है जिससे लिंग को अधिकतम हानि होती है। इस कारण लिंग की नसें टूट जाती हैं और लिंग बेजान हो जाता है फिर यह व्यक्ति स्त्री के काम का नहीं रहता तथा स्त्री के ज़िक्र से भी घबराता है। अपनी शादी का नाम सुनकर तक्लीफ़ होती है मान लो कि नरक का सा नमूना उसकी जवानी में ही आ जाता है।

बिल्कुल सच्चा वाक़िआ

मेरे पास एक साहब आऐ और एक लम्बी लिस्ट 98 नामों की लिखकर लाये और कहने लगे इसे पढ लो मैंने पढी और पूछा कि यह नाम कैसे हैं और किसके हैं तो वह बोले कि मैंने इन सबके साथ बदकारी की है जिसका अन्जाम यह हुआ कि मैं अब आसुँओं से नहीं ख़ून के आसुँओं से रोता हूँ। पूरी रात नींद नहीं आती रंज व ग़म में घुला जा रहा हूँ मेरी आयु के लड़कों के तीन-तीन, चार-चार बच्चे हैं। मैं अब तक (14) डॉक्टरों व हकीमों का इलाज करा चुका हूँ कोई फ़ायदा नहीं हुआ। आपकी दवा से भी अगर फ़ायदा नहीं हुआ तो मैं आत्महत्या कर लूँगा ऐसे जीने से मरना अच्छा। इसलिए मैं (लेखक) कहता हूँ कि ऊपर का जो हाल बयान किया सब हक़ीक़त है कि मर्द अगर औरत से बलात्कार करे तो हराम है परन्तु तौबा करे तो इन्शा अल्लाह ख़ुदा रह्मान व रहीम है माफ़ कर सकता है लेकिन लौंडेबाज़ी से जो लिंग की नसें टूट जाती हैं वे तौबा से नहीं जुड़ेंगी इस ग़लीज़ तरीन काम की इतनी हानियाँ हैं कि मेरे बस में इन तमाम को बयान करने की ताक़त नहीं है। इलाज इसका भी हो सकता है परन्तु बड़ी कठिनाइयों का मुक़ाबला करना पड़ेगा लेकिन तज्रिबे कार हकीम से इलाज कराना शर्त है छोटे मोटे हकीम के बस का नहीं, इसलिए कि इसमें अन्दर व बाहर दोनों ख़राब हो जाते हैं।

मुख़्तसर तरीक़े पर जल्क़ व इग़्लाम बाज़ी का इलाज

मुख्य तौर पर व आसान जल्क़ व इग़्लाम बाज़ी का इलाज यह है कि जब यह आदत पड़ जाये तो इलाज करने वाले को चाहिए कि क़सम दिलाकर इस गंदी आदत को छुड़वाये और इसकी हानियों से आगाह करे और नेक औलिया के वाक़िआत सुनाए बुज़ुर्गों के तक़्वे पर लिखी किताबें पढ़ने को दे। गंदे रिसाले व नाविल व सेक्सी किताबें देखने व पढ़ने से मना करे। गंदी आदतों की हानियाँ बताये ताकि वह फिर उसकी ओर ध्यान न दे तथा (24 घंटे) उसकी हर समय देखभाल रखे। इलाज शुरू करते ही जोश वाली वस्तुऐं बन्द कर दे। लिंग पर घाव व ख़राश दूर करने वाली लाभदायक दवा लगवाये ताकि वह इस बुरी आदत से बचा रहे और शक्तिदायक व गर्म वस्तुओं से भी परहेज़ कराये जैसे गोश्त, अन्डा, मछली, मुर्ग़, अधिक चाय, बैंगन वग़ैरह, गर्म मसाले से भी रोके। सादी व हल्की ग़िज़ा खिलाये हर प्रकार की मिर्च का बिलकुल परहेज़ होना चाहिये। हरी सब्ज़ी का अधिक सेवन कराये। क़ब्ज़ न होने दे और मेदे को ताक़त देने वाली वस्तुओं का प्रयोग कराना चाहिये। धात बंद करने और मसाने

को मज़बूत करने वाली दवा प्रयोग पहले कराये, लिंग पर लगाने वाली दवा हकीम के बताए तरीक़े पर प्रयोग करे। जोश की मात्रा अधिक हो तो हल्का करे।

क़ुव्वत-ए-मर्दाना के जोश को हल्का करने के लिए नुस्ख़ा

जैसा कि हमने ऊपर ज़िक्र किया कि शुरू में गर्म व ताक़त देने वाली और जोश को उभारने वाली वस्तुऐं रोक दें तो यह नुस्ख़ा उसके लिए लाभदायक है। अजवाइन ख़ुरासानी एक माशा, तुख़्म ख़ुर्फ़ा, तुख़्म काहू 3 माशा, तुख़्म ख़्यारेन, तुख़्म ख़शख़ाश 6 माशा इन सब दवाओं का अर्क़ निकाल कर शर्बत-ए-नीलोफ़र 2 तोला मिलाकर तुरंजबीन ख़ुरासानी एक तोला खाकर सुबह शाम निहार मुँह पिया करें।

मेदे को शक्ति देने वाली दवा

जिस प्रकार हमने ऊपर ज़िक्र किया था जल्क़ व इग़लाम के रोगी को मेदा ताक़तवर करने वाली वस्तुऐं दें जिन से क़ब्ज़ भी नष्ट होगा और असल इलाज में लाभकारी होगा नुस्ख़ा यह है - अनार दाना आठ तोला, सोंठ, ज़ीरा सफ़ेद, तरबद सफ़ेद एक तोला, समाक़,पोस्त, हलीला ज़र्द पोस्त हलीला छः माशा, नमक लाहौरी एक तोला तमाम को कूट छानकर पावडर बना लें छः माशा से नौ माशा तक अर्क़-ए-सौंफ़ या पानी से खायें।

संभोग के बाद स्नान (ग़ुस्ल) ज़रूरी है

संभोग के बाद हर मनुष्य को स्नान करना अनिवार्य है। स्नान में पूरे शरीर पर पानी बहाना ज़रूरी होता है क्योंकि संभोग करने से वीर्य निकलता है और वह पूरे ही शरीर से निकल कर आता है उसके निकलने से शरीर कमज़ोर हो जाता है इस कमज़ोरी को ख़त्म करने के लिए शरीर पर पानी डालना ज़रूरी है तथा वीर्य हर अंग से निकलकर आता है इसलिए हर अंग पर पानी डाला जाता है।

संभोग के बाद स्नान (ग़ुस्ल) का दूसरा भेद

संभोग करने से शरीर में सुस्ती व काहिली आ जाती है और स्नान करने से ह्रदय में ताक़त व चुस्ती आ जाती है। हज़रत अबूज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि ग़ुस्ल (स्नान) करने के बाद ऐसा मालूम होता है कि जैसे अपने ऊपर से पहाड़ उतार कर रख दिया।

स्नान (ग़ुस्ल) का तीसरा भेद

जब मनुष्य संभोग से फ़ारिग़ हो जाता है तो उसका दिल (मन) बेचैनी

और एक प्रकार की उलझन में फँस जाता है और उस पर ग़म सा छा जाता है और वह मनुष्य अपने को घुटन में पाता है। स्नान करने से वह उलझन दूर हो जाती है। बिना स्नान किए खाना-पीना और ऐसी हालत में दिन बिताना सुस्ती व ग़रीबी लाता है।

स्नान (ग़ुस्ल) का चौथा भेद

तज्रिबेकार हकीमों ने बयान किया है कि स्नान करने से शरीर की गयी ताक़त वापस आ जाती है और कमज़ोरी नष्ट हो जाती है। स्नान शरीर व आत्मा के लिए बहुत लाभदायक है। बिना स्नान रहना शरीर व आत्मा के लिए बहुत हानिकारक है।

स्नान का पाँचवाँ भेद

वीर्य निकलने से पूरे शरीर के मसाम (सुराख़) खुल जाते हैं और कभी उनसे पसीना भी निकलता है और उसके साथ शरीर के भीतर के अंगों से गंदे मवाद भी निकलते हैं। जो मवाद उन सुराख़ों पर आकर रुक जाते हैं अगर उनको धोया न जाये तो भयंकर बीमारी का डर रहता है इसलिए हर मनुष्य को स्नान ज़रूर करना चाहिए चाहे स्वप्नदोष के बाद हो या संभोग के बाद या किसी और कारण वीर्य निकले। वीर्य की पहचान हम पीछे लिख चुके हैं।

गर्भवती को यह एहतियात करनी चाहिए

जब स्त्री गर्भवती हो तो ऐसी वस्तुऐं जो अधिक गर्म हों सेवन न करें न दस्त लाने वाली चीज़ें जैसे पपीता कि कभी इससे गर्भ गिर जाता है अधिक खाने पर दस्त भी आ जाते हैं। दो हालतों में स्त्री को पपीता नहीं खाना चाहिए (1) गर्भ के समय उसकी अधिक मात्रा हानिकारक है। (2) माहवारी के समय उसकी ज़्यादती से ख़ून में ज़्यादती हो जाती है गर्भवती को गर्भ के समय ख़ुशबू नहीं सूँघना चाहिए,इससे भी हानि होती है।

गर्भवती इन चीज़ों का सेवन न करें जैसे - अरंडी का तेल, सना, गाजर, मूली, अधिक मिर्च अधिक खटाई और ऐसी मुबाशरत से बचना चाहिए जिसमें अधिक हरकत हो और तेज़ हरकत से गर्भ को हानि का भय है और शुरू गर्भ से चार माह तक और सातवें माह के बाद भी संभोग में एहतियात रखनी चाहिए। ऐसे ही गर्भवती को वज़न उठाने का कार्य नहीं करना चाहिए, ऊँची ऐढ़ी की जूती नहीं पहनना चाहिए क्योंकि ऊँची ऐढ़ी की चप्पल या जूती से पेट आगे को निकल आता है। ऊँचाई निचाई में क़दम संभालकर रखना चाहिए। गर्भवती महिलाओं को बार-बार पेशाब आता है इसका कारण यह है कि बच्चा फिसलकर

मसाने को दबाता है अगर पैशाब के साथ-साथ दर्द व तक्लीफ़ हो तो फ़ौरी तौर पर जाँच करायें हो सकता है कि पैशाब की नली में किटाणु हों। गर्भवती को हमेशा खुश रहना चाहिए जहाँ तक हो सके गुस्से से बचे वरना अन्दर बच्चे पर बुरा असर पड़ेगा।

बच्चा होने की आसानी के लिए मुजर्रब दवा

यह दवा अगर गर्भवती बच्चे के जन्म से एक माह पहले खाले और बराबर खाए तो बच्चा सरलता से जन्म लेगा इस दवा का यहाँ तक तज्रिबा देखा गया है कि बिना दाई के भी फिसलकर बच्चा बाहर आ जाता है जब जन्म का समय हो जाए। दवा का नाम जलसिमीम है बेहतर होगा कि जर्मन वाली या अमेरिकन लें। दिन में तीन दफ़ा तीन बूँद बहुत थोड़े पानी में मिलाकर या सिर्फ़ दवा की तीन बूँद सुबह शाम व रात को सोते समय पी लिया करें।

यह किताब अब समाप्त करता हूँ और खुदा से दुआ करता हूँ कि ऐ रब मेरी इस मेहनत को क़ुबूल फ़रमा। फ़ायदा उठाने वालों को पूरा लाभ पहुँचा, हर प्रकार के हराम से बचा ! आमीन, व सल्लल्लाहु तआला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्व आलिही व अस्हाबिही अज्मईन अव्वलन व आख़िरन व ज़ाहिरन व बातिनन बिरह्मतिक या अरहमर्राहिमीन।

नोटः इस किताब को पढ़ने वाले "तन्हाई के सबक़" को ज़रूर पढ़ें।

मुहम्मद अशरफ़ अम्रोहवी

इज़ाफ़ा (वृद्धि) अनुवादक की ओर से

आम कम्ज़ोरी कैसे दूर हो

इसका सरल उपाय सवेरे दौड़ना है और दवा यह है : असगंद नागौरी, सालब मिस्री, तुख़्मे कोंच, सितावर बराबर-बराबर लेकर कूटपीस कर रख लें सुबह पानी के साथ दस ग्राम सेवन करें।

पति-पत्नी में लड़ाई न हो

इसके लिए दोनों की आदत का सही होना है पति को चाहिए कि वह पत्नी को हदिया व तोहफ़ा दिया करे चाहे पाँच रुपये ही सही और कहे कि मैं तुमको हदिया देता हूँ जो दिल चाहे खा लेना। इससे उसका दिल बढ़ा होगा और ज़ाहिर है कि महिलाऐं पैसा जोड़कर रखती हैं तो वह पैसा भी आप ही के कार्य में खर्च होगा परन्तु स्त्री का मन खुश हो जाएगा।

मुख्य हिदायत

शादी के फ़ौरन (तुरन्त) बाद पति अपनी पत्नी को छोड़कर कहीं न जाये क्योंकि वह शादी से पहले जो खुद को रोके हुए थी वह इसलिए कि पति के साथ क्या मज़ा आता है इसको सिर्फ़ सुना था परन्तु अब वह जान चुकी है वह खुद को रोक न सकेगी। अगर बाहर जाना हो तो कुछ दिन के बाद जाएं पत्नी को अकेला न छोड़ें तथा बिगड़ी हुई या बाज़ारू महिलाओं को घर में न आने दें पत्नी को भी इनसे न मिलने दें।

रिश्ते बने रहें

इस सिलसिले में तज़्रिबा यह है कि जब पति अपनी पत्नी को बुलाने जाएगा तो कहेगा जल्दी तैयार हो जा बुलाने आया हूँ। इसी प्रकार अगर लड़की को उसके पिता या भाई बुलाने जाते हैं तो वह यही कहते हैं कि लड़की को लेने आये हैं फ़ौरन भेजो तो अगर इस अन्दाज़ को छोड़कर लड़का यह कहे कि अम्मी(सास जी) मैं इसलिए आया था कि घर पर जी नहीं लग रहा था तो सोचा कि आपकी खैर खबर ले लूँ और घर वालों ने भी कहा था कि उधर से उसको (लड़की को) या बहू को भी ले आना अगर परेशानी न हो तो भेज दो फिर आ जाएगी। इसी प्रकार लड़की के माता-पिता या भाई कहें कि काफ़ी समय से घर वाले बहन को याद कर रहे हैं या माता-पिता कहें कि बेटी को देखने को मन कर रहा था इसलिए सोचा कि आप से मुलाक़ात भी हो जाएगी और इसका मन भी शान्त व प्रशन्न हो जाएगा। अगर कोई परेशानी न हो तो भेज दें। अगर अभी काम हो तो मैं फिर आ जाऊँगा या आ जाऊँगी इस भाँति को अपनी आदत बना लें तो बड़ा लाभ होगा और रिश्ते चलते रहेंगे वरना वही होगा जो हो रहा है आपने सुना व देखा होगा।

रोग और चिकित्सा

पुरुषों के विशेष रोग

नपुन्सकता, पुरुष शक्ति की कमी

शबाब-ए-आज़म

मर्दाना ताक़त व सलाहियत प्रकृति की ओर से मिली हुई अमूल्य सम्पत्ति है। शादी शुदा ज़िन्दगी की खुशियों का दारोमदार मर्दाना ताक़त पर टिका है इसीलिए उसकी हिफ़ाजत अति आवश्यक है। शबाब-ए-आज़म मर्दाना ताक़त को बनाये रखने में बहुत मददगार सिद्ध हुई है क्योंकि यह माजून लिंग में हरकत पैदा करती है, लिंग को सख़्त व मोटा बनाती है, अंगों को ताक़त देने

वाली है। इसके इस्तेमाल से वीर्य बहुत बनता है और इसमें रुकावट की ताक़त अधिक होती है और संभोग के समय वीर्य देर से निकलता है जिसके कारण दोनों पक्षों को भरपूर आनन्द प्राप्त होता है।

सेवन विधि - 5 ग्राम सुबह तथा 5 ग्राम रात को एक पाव दूध के साथ सेवन करें।

जौहर-ए-ख़ुसिया

यह जानत्व ऊष्णता को बढ़ाता है जिससे काम शक्ति की दुर्बलता समाप्त हो जाती है। सामान्य शारीरिक दुर्बलता में भी लाभदायक है और शरीर की सामान्य गरिमा को भी बढ़ाती है।

सेवन विधि - एक ग्राम प्रातः एक पाव दूध से खायें 5 ग्राम लबूब-ए-कबीर या माजून सालब और दूध के साथ देने में अधिक प्रभावी है।

माजून अंजदान ख़ास

जिर्यान मनी (वीर्य) वदी मज़ी तीनों प्रकार के जिर्यान में यह अति लाभदायक है वीर्य को गाढ़ा करती है और पुरुष शक्ति को बढ़ाती है व रुकावट पैदा करती है, ख़ुसियों के बढ़ जाने और उनके वरम में अत्यन्त लाभकारी है।

सेवन विधि - 5-5 ग्राम यह माजून सुबह-शाम ताज़े पानी से या दूध से लें।

माजून मुग़ल्लिज़ जवाहर

वीर्य के पतले पन में सुधार करती है वीर्य को गाढ़ा करती है वीर्य की प्राकृतिक रुकावट उत्पन्न करती है जिर्यान में लाभकारी है।

सेवन विधि - 5-5 ग्राम सुबह-शाम एक पाव दूध से खायें।

माजून आरद ख़ुर्मा

कामेच्छा वृद्धि, जिर्यान, वीर्यपात, शीघ्रपतन और अधिक स्वप्नदोष में लाभ देती है वीर्य उत्पत्ती को ठीक करती है तथा काम शक्ति को बढ़ाती है क़ब्ज़ तोड़ने वाली औषधियों की वृद्धि हो जाने के बाद यह माजून क़ब्ज़ नहीं करती।

सेवन विधि - 10 ग्राम माजून सुबह को दूध के साथ खायें।

माजून फ़लास्फ़ा

स्नायुओं को सशक्त बनाती है। काम शक्ति में वृद्धि करती है। वीर्य पैदा करती है। कमर, गुर्दे और जोड़ों के दर्द में लाभकारी है। बार-बार पेशाब आने में उपयोगी है। पाचन क्रिया को सुचारू करके भूख में वृद्धि करती है। मुँह की बदबू दूर करती है और चेहरे के रंग को निखारती है।

सेवन विधि - 5-10 ग्राम तक यह माजून सुबह-शाम ताज़े पानी के साथ सेवन करें।

माजून मुग़ल्लिज़

वीर्य को गाढ़ा करती है पुरुष शक्ति को बढ़ाती है शीघ्रपतन व जिर्यान को दूर करती है।

सेवन विधि - 5 से-10 ग्राम तक यह माजून सुबह को दूध के साथ खाएं।

माजून मुमसिक मुक़व्वी

जिन नौजवानों ने नादानी और मूर्खता से अपने पौरुष अंगों को हाथों से खराब किया है वे शादी के बाद शीघ्रपतन रोग से ग्रस्त हो जाते हैं और औलाद पैदा करने में असमर्थ रहते हैं। ऐसे रोगियों के लिए यह दवा बहुत लाभदायक है अत्यधिक कामेच्छा में इसका प्रयोग चमत्कारिक रूप से लाभकर सिद्ध हुआ है।

सेवन विधि - अस्थायी लाभ के लिए आवश्यकता से एक घंटा पूर्व 2 ग्राम यह दवा दूध से खाएें और स्थायी लाभ के लिए रोज़ाना रात को सोते समय खाएें।

कुश्ता क़लई

जिर्यान, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन और वीर्य के पतलेपन में लाभदायक है वीर्य को गाढ़ा करता है। उसकी उत्पत्ती बढ़ाता है तथा हर मौसम में सेवन किया जाता है।

सेवन विधि - 60.मि.ग्रा या माजून आरद खुर्मा 6 ग्राम में मिलाकर दें तथा ऊपर से दूध पिलाऐं।

कुश्ता सदफ़

पुरुषों के पेशाब में वीर्यपात और स्त्रियों के सफ़ेद पानी (लिकोरिया) की शिकायत को दूर करता है। ह्रदय को शक्ति देता है।

सेवन विधि - 60.मि.ग्रा या माजून मुग़ल्लिज़ मिलाकर तथा स्त्रियों के लिए माजून सुपारी पाक 6 ग्राम में मिलाकर दूध से पिलाऐं।

कुश्ता मुसल्लस

जिर्यान वीर्यपात एंव वीर्य स्राव में लाभदायक है।

सेवन विधि - 30 से 60 मि.ग्रा माजून आरद खुर्मा 10 ग्राम में रखकर खाऐं।

सफ़ूफ़ असलुस्सूस

वीर्य के पतलेपन और जिर्यान दोष को दूर करता है क़ब्ज़ तोड़ता है।

सेवन विधि - 5 ग्राम यह सफ़ूफ़ ताज़ा दूध के साथ खिलाऐं।

सफ़ूफ़ बीजबन्द

जिर्यान, स्वप्न दोष, और शीघ्रपतन के लिए अति लाभदायक है।

सेवन विधि - 5 ग्राम सफ़ूफ़ ताज़ा दूध के साथ खिलाएँ।

हब्बे जवाहर

यह गोलियाँ वीर्य स्थलन को रोकती हैं काम शक्ति को पुष्ट करती हैं इसके अतिरिक्त दिमाग़ को भी शक्ति प्रदान करती हैं शीघ्रपतन, वीर्य के पतलेपन को दूर करती हैं तथा खाँसी व नज़ले को लाभ पहुँचाती है।

सेवन विधि - 1 या 2 गोली सुबह-शाम दूध से सेवन करें।

हब्बे जिर्यान

हर तरह के जिर्यान में लाभकारी, गुर्दे तथा मूत्राशय को शक्ति देती है। पेशाब के बाद या साथ-साथ धात के क़तरे को रोकती है। वीर्य के पतलेपन व पेशाब की जलन दूर करती है।

सेवन विधि - एक गोली प्रतिदिन सुबह एंव शाम पानी से सेवन करें।

हब्बे मुमसिक

यह बहुत शक्तिदायक है वीर्य स्खलन में ठहराव पैदा करती है।

सेवन विधि - एक गोली प्रतिदिन रात को सोते समय दूध से सेवन करें। अस्थायी लाभ के लिए एक गोली संभोग से एक घंटा पूर्व भोजन के पश्चात 250 मिलीग्राम दूध से खाएं गोली खाने के बाद संभोग तक कुछ न खाएं।

इंद्रिय ढीलापन

फ़रबा - मर्दाना विशेष अंग की रगों और पट्ठों को शक्ति देता है। उसकी कमियों को दूर करता है। सुस्ती को भगाता है और लिंग की लम्बाई व चौड़ाई को बढ़ाता है जिसके कारण व्यक्ति संभोग के समय भरपूर आनन्द उठाता है।

फ़ोतों का वर्म

इस रोग में इतरीफ़ल शाहतरा, माजून ऊश्बा लाभदायक है।

अगर खुजली हो जाये

खुजली हो जाए तो मुसफ़्फ़िये अजीब, शर्बत उन्नाब और माजून चोबचीनी फोतों की खुजली को मिटाता है। .... दवाओं के नाम व सेवन विधियाँ "सेक्स रोग और चिकित्सा" पेज न० 49 से 56 तक से नक़्ल की गई हैं। आप उसे पढ़ सकते हैं।